Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

अल्लाह तआला का आदेश

وَ مَنۡ یُّطِعِ اللّٰہَ وَ الرَّسُوۡلَ فَاُولٰٓئِکَ مَعَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمَ اللّٰہُ عَلَیۡہِمۡ مِّنَ النَّبِیّٖنَ وَ الصِّدِّیۡقِیۡنَ وَ الشُّہَدَآءِ وَ الصّٰلِحِیۡنَ ۚ وَ حَسُنَ اُولٰٓئِکَ رَفِیۡقًا

(सूरत अन्निसा आयत :70)

अनुवाद: और जो भी अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञापालन करे तो यही वे लोग हैं जिन पर अल्लाह ने इनाम किया अर्थात नबियों में से, सिद्दीक़ों में से शहीदों में से और सालेहीन में से। और ये बहुत अच्छे साथी हैं।

वर्ष 5

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक- 40

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

13 सफर 1441 हिज्री कमरी 1 इख़ा 1399 हिज्री शम्सी 1 अक्तूबर 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनसरिहिलि;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आचरण का कमाल यहां तक है कि अगर कोई बुढ़िया भी आप का हाथ पकड़ती थी तो आप खड़े हो जाते और इसकी बातों को बहुत ध्यान से सुनते और जब तक वह ख़ुद आप को न छोड़ती। आप न छोड़ते थे।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

दुआ और कानूने क़ुदरत का आपसी सम्बन्ध

यहां उचित मालूम होता है कि इस बात को वर्णन कर दिया जाए कि कानूने क़ुदरत में हमेशा दुआ का सम्बन्ध है। आजकल के नेचरी प्रकृति वादी लोग जो सच्चे ज्ञानों से सम्पूर्ण रूप से अज्ञान हैं और उनकी सारी चेष्टाओं का नतीजा यूरोप की सभ्यता की नक़्ल उतारना है, दुआ को एक बिद्अत समझते हैं। इस लिए उचित मालूम होता है कि दुआ के सम्बन्ध पर कुछ संक्षिप्त बहस की जाए।

देखो एक बच्चा जब भूख से परेशान और व्याकुल हो कर दूध के लिए चिल्लाता है और चीख़ता है, तो माँ के स्तन में दूध जोश मारकर आ जाता है; हालाँकि बच्चा तो दुआ का नाम भी नहीं जानता, लेकिन यह क्या कारण है कि उसकी चीख़ें दूध को खींच लेती हैं। यह एक ऐसा मामला है कि प्राय हर एक व्यक्ति को इसका अनुभव है। कई बार ऐसा देखा गया है कि माएं अपनी छातियों में दूध को महसूस भी नहीं करती हैं और कई बार होता भी नहीं, लेकिन जैसे ही बच्चा की दर्द-नाक चीख़ कान में पहुंची , शीघ्र दूध उतर आता है। जैसे बच्चे की उन चीख़ों को दूध के जज़्ब और कशिश के साथ एक सम्बन्ध है। मैं सच कहता हूँ कि अगर अल्लाह तआला के हुज़ूर हमारी चिल्लाहट ऐसी ही वेदना वाली हो तो वह उसके फ़ज़्ल और रहमत को जोश दिलाती है और उसको खींच लाती है और मैं अपने अनुभव के आधार पर कहता हूँ कि ख़ुदा के फ़ज़्ल और रहमत को जो क़बूलियत दुआ की अवस्था में आता है, मैंने अपनी तरफ़ खींचते हुए महसूस किया है बल्कि मैं तो यह कहूँगा कि देखा है। हाँ आजकल के ज़माना के अन्धे दिमाग़ फिलासफर इसको अनुभव न कर सकें या न देख सकें तो यह सच्चाई दुनिया से उठ नहीं सकती और प्राय ऐसी हालत में जब कि मैं क़बूलियत दुआ का निशान दिखाने के लिए हर समय तैयार हूँ।

अत: यह है कि क़ानूने क़ुदरत में क़बूलीयत दुआ के उदाहरण मौजूद हैं और हर ज़माना में ख़ुदा तआला ज़िन्दा निशान भेजता है। इस लिए उस ने اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ की दुआ की शिक्षा दी है। यह ख़ुदा तआला का इच्छा और क़ानून है और कोई नहीं जो इसको बदल सके اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ की दुआ से पाया जाता है कि हमारे कर्मों को सम्पूर्ण और उत्तम कर। इन शब्दों पर ग़ौर करने से मालूम होता है कि ज़ाहिर में तो कुरआन की आयत से दुआ करने का हुक्म मालूम होता है कि सीधे मार्ग की हिदायत मांगने की शिक्षा है , लेकिन इसके शुरू में اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ(अलफ़ातिहा: 5) बता रहा है कि इससे लाभ उठाएं अर्थात सीधे मार्ग के मनाज़िल के लिए नेक शक्तियों से काम लेकर अल्लाह

शेष पृष्ठ 8 पर

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नमाज़

हज़रत जाबिर बिन समरा से रिवायत है कि हज़रत सअद रज़ि कहते थे कि मैं उन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नमाज़ की तरह ही ज़ुहर अस्र की नमाज़ पढ़ाया करता था। मैं आप की नमाज़ से थोड़ा भी अन्तर नहीं करता था। पहली दो रकअतों को लम्बी करता और पिछली दो रकअतों को हल्की। तो हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अन्हो ने कहा: मेरा आपके बारे में यही विचार है।

नोट: सअद रज़ि से अभिप्राय आँहज़रत सल्लल्लाहो के महान बदरी सहाबी हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ी अल्लाह अन्हो हैं। आपके गवर्नर थे, आप पर यह आरोप लगाया जाता था कि आप रज़ि दो रकअतें लम्बी पढ़ाते हैं और बाक़ी दो छोटी। आपने फ़रमाया कि मैं उन्हें रसूलुल्लाह की नमाज़ की तरह ही नमाज़ पढ़ाता हूँ।

(सही बुख़ारी, भाग 2 किताबुल आज़ान, बाब वजूबिल किराअत, प्रकाशन कादियान 2006 ई)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा अपने बाप से रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाज़ ज़ुहर की पहली दो रकअतों में सूरह फ़ातिहा और दो सूरतें पढ़ा करते थे। पहली रकअत में(किरअत)लम्बी करते और दूसरी में छोटी और कभी-कभी कोई आयत हमको सुना भी देते और अस्र में भी सूरा फ़ातिहा और दो सूरतें पढ़ा करते थे (पहली रकअत में किरअत)लम्बी करते और आप सुबह नमाज़ की पहली रकअत में भी (किरअत)लंबी करते थे और दूसरी में छोटी। (बुख़ारी, भाग 2 किताबुल आज़ान, क़ादियान 2006 ई)

तुम्हें यह निर्धारित कर लेना चाहिए कि हम में कोई गुण ऐसा न हो जिस में दूसरा हम से आगे निकले।

وَلِکُلٍّ وِّجۡہَۃٌ ہُوَ مُوَلِّیۡہَا فَاسۡتَبِقُوا الۡخَیۡرٰتِ(सूरह अल्बकरह:149) की तफसीर में हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब ख़लीफतुल मसीह सानी फ़रमाते हैं कि

“संसार में हर व्यक्ति का एक लक्ष्य होता है किसी को खाने पीने का शौक़ होता है किसी को आराम का शौक़ होता है। किसी को व्यापार का शौक़ होता है। किसी को अच्छे लिबास का शौक़ होता है किसी को ग़ीबत और बुरी बातें कहने का शौक़ होता है। किसी को लड़ाई झगड़े का शौक़ होता है। सार यह कि कोई इन्सान नहीं जिसने अपने लिए किसी न किसी चीज़ की प्राप्ति को अपना लक्ष्य क़रार न दिया हुआ हो। ग़रीब से ग़रीब और मूर्ख से मूर्ख भी अपने सामने कोई न कोई लक्ष्य रखता है किसी का लक्ष्य चौधराइयत प्राप्त करना होता है किसी का लक्ष्य उच्च शिक्षा प्राप्त करना होता है किसी का उद्देश्य स्यासी सत्ता प्राप्त करना होता है। फ़रमाता है कि जब कोई न कोई मक़सद हर इन्सान के सामने होता है तो फिर तुम वह बात क्यों न करो जिसमें सब अच्छी बातें आ जाएं। तुम्हें यह संकल्प कर लेना चाहिए कि कोई ख़ूबी ऐसी न हो जिसमें दूसरा हमसे आगे निकल जाए। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में एक बार हज़रत अबू बकर रज़ि और हज़रत उमर रज़ि का आपस में झगड़ा हो गया। जब वे जुदा हुए तो हज़रत उमर रज़ी अल्लाह अन्हो को अफ़सोस हुआ आप इस विचार से कि अगर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को किसी दूसरे माध्यम से इसकी ख़बर हुई तो आपको कष्ट होगा शीघ्र रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास पहुंचे और निवेदन किया हे अल्लाह के रसूल!

शेष पृष्ठ 9 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रिरिहिल अज़ीज़ का यूरोप का सफर, सितम्बर अक्तूबर 2019 ई (भाग-20)

जब आपके ख़लीफ़ा हाल में दाख़िल हुए तो मुझ पर एक नाक़ाबिले ब्यान रूहानियत छा गई।

किसी की शख़्सियत का ऐसा प्रभाव मेरे लिए ज़िन्दगी में पहला अनुभव था, इसलिए अब मेरी इच्छा है कि मैं जमाअत अहमदिया से मज़बूत सम्बन्ध बनाऊं।

इमाम जमाअत अहमदिया के हाल में आने पर जिस तरह की ख़ामोशी और सम्मान की फ़िज़ा पैदा हुई वह तो वर्णन से बाहर थी।

परन्तु जो प्रभाव उनके शब्दों में था और जिस तरह उनकी बातों ने सीधा दिल पर जा कर प्रभाव किया है यह बात दुनियावी तौर पर महान शख़्सियात के हिस्से नहीं आती।

आपका वजूद एक रुहानी प्रभाव डालने वाला वजूद था और अमन वाली बात करने के अतिरिक्त अमन और शान्ति आपकी ज़ात और चेहरे से स्पष्ट थी।

आपके ख़लीफ़ा एक जादू करने वाले व्यक्तित्व के मालिक हैं और उनको देखकर एक विशेष तरह के सम्मान के भावनाएँ पैदा होती हैं, आपका ख़िताब भी आप की ज़ात से बराबर है।

मैंने ख़लीफ़ा के वजूद को एक रुहानी प्रभाव रखने वाला वजूद पाया और सारे प्रोग्राम में मुझ पर यही विचार ग़ालिब रहा, मुझे हुज़ूर का वजूद एक बहुत ही आराम वाला इहसास दिलाता रहा।

मुझे हुज़ूर बहुत ही अच्छे लगे और मैं शब्दों में वर्णन नहीं कर सकती कि आप कितने महान इन्सान हैं, एक ऐसा व्यक्तित्व जिससे नूर ही नूर प्रकट हो रहा है।

मुझे इससे पहले इस्लाम का कोई इल्म नहीं था,मेरे लिए आप ही की ज़ात इस्लाम का पहला परिचय है, जो मुझे बहुत अच्छी लगी

फ़ुलडा में मस्जिद बैयतुल हमीद के उद्घाटन आयोजन में हुज़ूर अनवर का ख़िताब सुनने के बाद मेहमानों के ईमान बढ़ाने वाले विचार।

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

20 अक्तूबर 2019 ई(दिनांक इतवार)बाक़ी रिपोर्ट

मेहमानों के विचारों

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के आज के ख़िताब ने शामिल होने वाले मेहमानों पर गहरे प्रभाव छोड़े। बहुत से मेहमानों ने अपने विचारों का इज़हार किया। मेहमानों के विचार प्रस्तुत हैं।

मिस कीराह हेनीमन (Miss kirah Hanemann) साहिबा जिनका सम्बन्ध पुलिस विभाग से है अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहती हैं जब आपके ख़लीफ़ा हाल में दाख़िल हुए तो मुझ पर एक नाक़ाबिले ब्यान रुहानी कैफ़ीयत छा गई जो मैं समझती हूँ कि कुरआन की शिक्षा की सुन्दरता का प्रभाव का इज़हार था जो इमाम जमाअत अहमदिया को देखने से हुआ। किसी की शख़्सियत का ऐसा प्रभाव मेरे लिए ज़िन्दगी में पहला अनुभव था। इसलिए अब मेरी इच्छा है कि मैं जमाअत अहमदिया से मज़बूत सम्बन्ध बनाऊं और अगले रमज़ान का सारा महीना आप लोगों के साथ गुज़ारूँ जिससे इस रुहानी तजुर्बे को और अधिक बढ़ावा मिले।

एक मेहमान हेरालड बूनज़ल (Harald Boensel)ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा इमाम जमाअत अहमदिया ने अपनी तक़रीर में जितनी साझी बातों पर इकट्ठे होने को आपसी एकता और ग्लोबल शान्ति की बुनियाद बना कर विश्व शान्ति की तहरीक की है मुझे यह वर्णन दुनिया के वर्तमान हालात में बहुत अधिक अनुकरण योग्य लगती है और इसी की इस वक़्त दुनिया को ज़रूरत है और मैं जान चुकी हूँ कि इस से पहले जो परिचय हमें इस्लामी शिक्षाओं के बारे में था वह इस्लाम की ठीक तस्वीर प्रस्तुत नहीं करता। इसलिए आज की शाम मेरे लिए एक सकारात्मक और अमन वाला पैग़ाम लाई है।

एक मेहमान मिस्टर हेलमूट कीराह (Helmot Kirah)जो एक स्थानीय स्कूल की तरफ़ से आयोजन में शामिल हुए थे कहते हैं। इमाम जमाअत अहमदिया की आज की तक़रीर सब स्कूलों में छात्रों को सुनवा कर पूछना चाहिए कि आप इस से क्या समझे और आपके विचार में यह ख़ूबसूरत शिक्षा किस धर्म की हो सकती है? कम से कम मुझे तो आप उस की आडियो वीडियो रिकार्डिंग ज़रूर उपलब्ध करें ताकि मैं अपने स्कूल के छात्रों के साथ इस शाम की अवस्था शेयर कर सकूं।

एक मेहमान औरत मिस इहर्ग (Miss Ihrig)साहिबा ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा कि इस तक़द्दुस और सम्मान के प्रभाव के अतिरिक्त जो इमाम जमाअत अहमदिया की शख़्सियत के लिए मेरे दिल में मौजूद रहा मैं उनकी तक़रीर के इस वाक्य से प्रभावित हूँ, कि जो आपने फ़रमाया कि"इस ज़माना में विश्वव्यापी अमन की स्थापना के लिए पहला क़दम यह है कि हमें अपने दिलों को खोलना पड़ेगा और दूसरों के विचारों और आस्थाओं के लिए अपने दिल में वुसअत पैदा करनी पड़ेगी।'

एक स्टूडेंट ल्यूक्स जीरक Lucas Goerke कहते हैं विश्वव्यापी धर्मों के भाईचारा और ग्लोबल शान्ति पर आपके ख़लीफ़ा की समस्त बातों से इत्तिफ़ाक़ करने के नतीजे में समाज स्थायी अमन का घर बन सकता है और मुझे इमाम जमाअत अहमदिया की तबीयत में विनय और सादगी बहुत पसन्द आई।

मनप्रीत सिंह साहिबा अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहती हैं इमाम जमाअत अहमदिया के हाल में आने पर जिस तरह की ख़ामोशी और सम्मान की फ़िज़ा पैदा हुई वह तो बादशाहों जैसी थी परन्तु जो प्रभाव उनके शब्दों में थे और जिस तरह उनकी बातों ने सीधा दिल पर जा कर प्रभाव किया है यह बात दुनियावी तौर पर महान शख़्सियात के हिस्से में नहीं आती। आपका वजूद एक रुहानी प्रभाव डालने वाला वजूद था और अमन वाली बात करने के अतिरिक्त अमन और शान्ति आपकी ज़ात और चेहरे से भी स्पष्ट थी। खासतौर पर आपने बदअमनी के हालात के परिप्रेक्ष्य में जानवरों के उदाहरण देकर इन्सानियत का दावा करने वालों की अन्तरात्मा को झंजोड़ा है और यह उदाहरण तरक़्क़ी करने वाले समाज के लिए स्पष्ट इशारा था। मुझे इमाम जमाअत अहमदिया का ख़िताब संक्षिप्तता की दृष्टि से बहुत पसन्द आया।

एक साथ वाले शहर के मेयर 'वर्नरडीटरश (werner Dietrich) साहिब ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा। मुझे इमाम जमाअत अहमदिया की तक़रीर के शब्दों के च्यन ने बहुत हैरान किया। आपने ठहराव और शान्ति वाली शैली में सारा पैग़ाम भी दिया, दो तरफ़ की शंकाएं और सम्बन्धों की तुलना भी प्रस्तुत की और समाज के वर्गों में मौजूद आपसी कश्मकश के कारण भी खोल कर बताए और खुले शब्दों में इन कारणों की निशानदेही भी कर दी जो समाज का अमन बर्बाद करते हैं परन्तु इसके बावजूद किसी वर्ग या फ़िरक़े या गिरोह की इज़्ज़ते नफ़स पर कोई सख़्त बात नहीं की बल्कि सामूहिक इन्सानी अन्तर्आत्मा और विश्वव्यापी इन्सानी क़दरों से Food for Thought के रंग में बात करते गए और समापन अपनों और ग़ैरों के लिए दुआ ख़ैर के शब्दों से किया।

मिस साईबले(Miss Sybille) साहिबा कहती हैं इमाम जमाअत अहमदिया ने मानव जाति को नसीहत करने के लिए भी और चेतावनी देने के लिए भी शब्दों का

शेष पृष्ठ 10 पर

ख़ुत्ब: जुमअ:

जमाअत अहमदिया किसी फ़िरक़े या सम्प्रदाय के अन्तर या दृष्टिकोण के मतभेद और तशरीह एवं तफ़्सीर पर स्थापित होने वाली जमाअत नहीं है बल्कि यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार और अल्लाह तआला के वादा के अनुसार आख़िरी ज़माने में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम के द्वारा स्थापित होने वाली जमाअत है।

"सब मुसलमानों को जो धरती पर हैं जमा करो एक धर्म पर"

मुझे हज़रत अली रज़ि और हज़रत हुसैन रज़ि के साथ एक सूक्ष्म सम्बन्ध है और इस सम्बन्ध की हक़ीक़त को पूर्व एवं पश्चिम के रब के अतिरिक्त कोई नहीं जानता और मैं हज़रत अली और आपके दोनों बेटों से मुहब्बत करता हूँ और जो उनसे शत्रुता रखे उस से मैं शत्रुता रखता हूं।

मसीह मौऊद और हकम एवं अदल की जमाअत मतभेद ख़त्म करने के लिए स्थापित हुई है।

जब हालात बता रहे हैं कि यह वह युग है जिसमें वे निशानीयां जो क़ुरआन तथा हदीस से पता चलती हैं पूरी हो रही हैं या हो गई हैं तो क्यों न हम इस हकम और अदल की और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम की तलाश करें जो शीया सुनी और विभिन्न फ़िर्क़ों और मसलकों के मतभेद को ख़त्म करके हमें एक बनाने वाला है।

इस्लाम की यदि कोई सेवा इस युग में हो सकती है, इस्लाम की सुरक्षा की यदि इच्छा है तो फिर उस अल्लाह के पहलवान के साथ जुड़ कर ही हो सकती है जिसे इस ज़माने में अल्लाह तआला ने इस काम के लिए भेजा है।

हमारी कामयाबी अब इसी में है कि ज़माना के इमाम और मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आ जाएं।

अल्लाह तआला ने यही मुक़द्दर किया है कि इस बार ज़ाहिरी फ़तह भी इंशा अल्लाह तआला हुसैनी गुण रखने वालों की होगी और दुश्मन असफल तथा नामुराद होंगे।

मसीह मौऊद और हकम एवं अदल की जमाअत मतभेद ख़त्म करने के लिए स्थापित हुई है और बावजूद मुख़ालफ़तों, मुक़द्दमों ,सख़्तियों और गालियों के हमारी तरफ़ से हर एक को अमन और सलामती और दुआ का ही पैग़ाम होता है।

हकम व अदल हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की लेखनी तथा उपदेशों की रोशनी में अहले बैयतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और ख़ुलफ़ाए राशिदीन रज़ी अल्लाह अन्हुम की फ़ज़ीलत का वर्णन। मुहर्रम के दिनों में दुरूद शरीफ़ के विर्द और अन्य दुआओं की तहरीक।

ख़ुत्ब: जुमअ: सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 28 अगस्त 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ إِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

इस ज़माने में अल्लाह तआला ने अपने वादा के अनुसार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में ज़माना के इमाम मसीह मौऊद और महदी माहूद को हकम और अदल बना कर भेजा है। वह हकम और अदल जिसने इस्लाम की वास्तविक शिक्षा की रोशनी में समस्त मुसलमानों को एक उम्मत बनाना था। जिसने विभिन्न मस्लकों और फ़िर्क़ों की ग़लत व्याख्या और आपसी मतभेद को दूर करके एक उम्मत बनाना था। जिसने मुसलमानों को एक वहदत प्रदान करनी थी। अत: आज हम देखते हैं कि मुसलमानों के हर फ़िरक़े में से वे लोग जिन्होंने संजीदगी से ग़ौर किया, इस्लाम के विभिन्न फ़िर्क़ों के मतभेद के दर्द को महसूस किया उन्होंने इल्म ,अक़्ल और दुआओं से काम लेते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में शामिल हुई और लाखों की संख्या में हर साल ये शामिल होते चले जा रहे हैं। अत: जमाअत अहमदिया किसी फ़िर्क़े या मसलक के अन्तर या दृष्टिकोण के अन्तर और तशरीह तथा तफ़्सीर पर स्थापित होने वाली जमाअत नहीं है बल्कि यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार और अल्लाह तआला के वादा के अनुसार आख़री ज़माने में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम के द्वारा स्थापित होने वाली जमाअत है जिसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आकर उन्हीं मतभेद को जो शीया, सुन्नी के बीच हैं या किसी फ़िर्क़े और मसलक के बीच हैं ख़त्म करके एक उम्मत बनना है। मुसलमानों को इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से आगाह करके हमने एक उम्मत बनाना है। इस काम के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मबऊस हुए थे। इसी काम के लिए आप ने जमाअत की स्थापना अल्लाह तआला के आदेश से की और इस काम के करने के लिए अल्लाह तआला ने आपको इल्हाम के द्वारा फ़रमाया कि ''सब मुसलमानों को जो सारी ज़मीन पर हैं जमा करो एक उम्मत पर।''

(तज़किरा पृष्ठ 490 प्रकाशन 4)

अत: यह काम जो अल्लाह तआला ने आपके सपुर्द फ़रमाया है यही काम आपके बाद ख़िलाफ़त से जुड़ कर, उसकी बैअत में आकर आप की बनाई गई जमाअत का है और यही हम अल्लाह तआला के फ़ज़ल से पिछले एक सौ तीस साल से कर रहे हैं या जब से ख़िलाफ़त का निज़ाम शुरू हुआ तो एक सौ बारह साल से कर रहे हैं। इस से पहले हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह काम किया। और न सिर्फ मुसलमानों को क़ुरआन करीम ,सुन्नत नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और सही अहादीस युग के इमाम और हक्म और अदल की रूहानी व्याख्या की रोशनी में बता रहे हैं बल्कि ग़ैर मुस्लिमों को भी इस्लाम की सुन्दर शिक्षा बता कर उन्हें इस्लाम की दावत में शामिल करने की कोशिश कर रहे हैं। अत: मसीह मौऊद और हकम तथा अदल की जमाअत मतभेदों को ख़त्म करने के लिए स्थापित हुई है और बावजूद विरोधों, मुक़द्दमों, सख़्तियों और गालियों के हमारी तरफ़ से हर एक को अमन और सलामती और दुआ का ही पैग़ाम होता है। यक़ीनन हमने हक़ को फैलाने और हक़ बात कहने से नहीं रुकना और इसके लिए क़ुर्बानियां भी दे रहे हैं। लड़ाई और गाली ग्लोज न हमारी तरफ़ से पहले कभी हुई न होगी। इलाही जमाअतों के विरोध भी होते हैं और उनको ज़ुलम भी सहने पड़ते हैं लेकिन अन्त में अल्लाह तआला उन्हें कामयाबी प्रदान फ़रमाता है। हम दुआ भी करते हैं और जैसा कि मैंने कहा कि कोशिश भी करते रहेंगे कि युग के इमाम के पैग़ाम को हर मज़हब और हर देश के लोगों में फैलाते रहें लेकिन साधारण मुसलमान और संजीदा वर्ग और हक़ के अभिलाषी और फ़ित्ना तथा फ़साद ख़त्म करने की इच्छा रखने वाले बुद्धिमान और अक़्ल वाले लोगों से भी मैं कहता हूँ कि इस बात पर ग़ौर करें। आरम्भ की कुछ दहाईयों के इलावा शुरू से ही मुसलमान मतभेद में पड़े रह कर सैंकड़ों साल से

अपनी एकता और इकाई को कमज़ोर करते चले आ रहे हैं। आजकल हम मुहर्रम के महीना से गुज़र रहे हैं जो इस्लामी साल के कैलंडर का पहला महीना है। अंग्रेज़ी साल के शुरू होने पर हम एक दूसरे को मुबारकबाद देते हैं लेकिन बदक़िस्मती यह है कि इस्लामी साल के शुरू होने पर कई मुसलमान देशों में इस फ़िर्कावारीयत के कारण से क़तल तथा हमले होते हैं। वह धर्म जो अमन और सलामती की उच्च शिक्षा देने वाला धर्म है क्यों उसके मानने वाले अपने साल का आरम्भ फ़ित्ना तथा फ़साद और क़तल एवं हमलें से करते हैं ?हमें सोचना चाहिए। हमें अपने व्यवहारों को बदलना चाहिए। हमें देखना चाहिए कि किस तरह हम मुसलमानों को एक उम्मत बना कर उन फसादों और दहश्त गर्दियों को ख़त्म कर सकते हैं? हमें ग़ौर करना चाहिए कि हमारे आक़ा हज़रत ख़ातमुल अंबियां मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यदि इस्लाम की आरम्भिक तरक़्क़ी के बाद एक ख़राब ज़माने की ख़बर दी थी तो फिर ये ख़ुशी की ख़बर भी दी थी कि नबुव्वत की पद्धति पर ख़िलाफत की प्रणाली स्थापित होगी। वही मामला जिसके कारण से मुसलमानों में मतभेद हुआ था वही मामला आख़िरी युग में नबुव्वत की पद्धति पर ख़िलाफत की प्रणाली की स्थापना के बाद मुसलमानों को एक उम्मत बनाने का माध्यम भी बन जाएगा। मुसलमानों की तरक़्क़ी और इकाई का एक रोशन निशान बन जाएगा। अत: जब हालात बता रहे हैं कि ये वह युग है जिसमें वे निशानीयां जो क़ुरआन तथा हदीस से पता चलती हैं पूरी हो रही हैं या हो गई हैं तो क्यों न हम इस हक्म और अदल की और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम की तलाश करें जो शीया सुनी और विभिन्न फ़िर्क़ों और मसलकों के मतभेद को ख़त्म करके हमें एक बनाने वाला है। इन अंधे तथाकथित उल्मा का अनुकरण न करें जो ख़ुद भी डूब रहे हैं और अपने साथ एक बड़ी संख्या में मुसलमानों को भी डुबोने की कोशिश कर रहे हैं। देखें जब वे निशानियां पूरी हो गईं जिनमें क़ुरआन और हदीस से पता चलता है तो हमें यह देखने की ज़रूरत है कि वह कौन है, उसे तलाश करने की ज़रूरत है। वह कौन है जो इस्लाम के पुन: जागरण का माध्यम बना कर अल्लाह तआला की तरफ़ से खड़ा किया गया है। किसी को खड़ा होना चाहिए। हम अहमदी कहते हैं कि वह जमाअत अहमदिया के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादयानी अलैहिस्सलाम हैं जिनके सपुर्द अल्लाह तआला ने इस्लाम के पुनर्जागरण का काम किया है या जिनके माध्यम से अल्लाह तआला इस्लाम का पुनर्जागरण करवा रहा है या करवाएगा जिन्होंने झगड़ों और फसादों को अमन तथा सलामती में बदलना है। अत: हम में यदि अक़्ल है तो हमें चाहिए कि हम मुहर्रम को सिर्फ़ अफ़सोस करने या फिर अपने नफरतों और द्वेषों और क्रोधों को निकालने का महीना न बनाएँ, केवल अपनी भावनाओं के इज़हार का माध्यम न बनाएँ बल्कि एक दूसरे से मुहब्बत और प्यार का महीना बनाएँ। इस वास्तविक शिक्षा पर चलें जो इस्लाम की शिक्षा है। इस रहनुमा के पीछे चलें जिसे इस युग में अल्लाह तआला ने हकम तथा अदल का स्थान दिया है तभी हम वास्तविक मुसलमान कहला सकते हैं। तभी हम दुनिया को अपने पीछे चला सकते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक जगह एक आलिम को समझाते हुए फ़रमाया कि

"मेरी हैसियत एक मामूली मौलवी की हैसियत नहीं है बल्कि मेरी हैसियत अंबिया की सुन्नत जैसी हैसियत है। मुझे एक आसमानी आदमी मानो फिर ये सारे झगड़े और समस्त झगड़े जो मुसलमानों में पड़े हुए हैं एक क्षण में तय हो सकते हैं। जो ख़ुदा की तरफ़ से मामूर हो कर हक्म बन कर आया है जो अर्थ क़ुरआन शरीफ़ के वह करेगा वही सही होंगे और जिस हदीस को वह सही क़रार देगा वही सही हदीस होगी। वर्ना शीया सुन्नी के झगड़े आज तक देखो कब तय होने में आते हैं।" अभी तक तो नहीं हुए। "शीया यदि तबर्रा करते हैं।" यानी तीन खलीफ़ा को बुरा-भला कहते हैं। उनके बारे में ग़लत शब्दों का इस्तिमाल करते हैं।" तो कुछ ऐसे भी हैं। दूसरों में से "जो हज़रत अली कर्मल्लाहो वज्हहो के बारे में कहते हैं

बर ख़िलाफ़त दिलश बसे माइल

लेकि बू बूकर शुद् दरमियां हाइल'

कि ख़िलाफ़त पर इस का दिल बहुत माइल था लेकिन अबूबकर इस में हाएल (रोक)हो गया अर्थात कि उनकी इच्छा थी। फ़रमाते हैं कि "परन्तु मैं कहता हूँ कि जब तक यह अपना तरीक़ा छोड़कर मुझ में हो कर नहीं देखते यह हक़ पर हरगिज़ नहीं पहुंच सकते। यदि उन लोगों को और विश्वास नहीं तो इतना तो होना चाहिए कि आख़िर मरना है और मरने के बाद गंद से तो कभी नजात नहीं हो सकती।" आख़िर मरना है और मरने के बाद गंद से तो कभी नजात नहीं हो सकती। "गाली गलोज जब एक शरीफ़ आदमी के निकट पसंदीदा चीज़ नहीं है तो फिर पवित्र ख़ुदा के निकट इबादत कब हो सकती है?' इन्सान इसी तरह ग़लत काम कर रहा है, ज़ुल्म कर रहा है तो उसकी इबादत तो फिर अल्लाह के हुज़ूर इबादत नहीं कहला सकती। इसी लिए फ़रमाया "इसी लिए तो मैं कहता हूँ कि मेरे पास आओ, मेरी सुनो ताकि तुम्हें हक़ नज़र आए। मैं तो सारा ही चोला उतारना चाहता हूँ। सच्ची तौबा करके मोमिन बन जाओ।" यह जो बनावटों का और ग़लत आस्थायों का चोला पहना हुआ है इस को उतारो। सच्ची तौबा करो तभी मोमिन बन सकते हो।" फिर जिस इमाम की तुम प्रतीक्षा कर रहे हो मैं कहता हूँ वह मैं हूँ उसका सबूत मुझसे लो।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 140-141)

अत: यह है वह हक़ीक़त, जिससे धर्म की सही समझ पैदा हो सकती है कि आपस के लड़ाई झगड़ों, अनाओं को ख़त्म करके फिर अल्लाह तआला के हुज़ूर हाज़िर हों। इस से दुआ करें। वास्तविक तौबा करें और यह उसी वक़्त हो सकता है जब अपने दिल को हर गन्दगी से साफ़ करके अल्लाह तआला के आगे झुका जाए फिर अल्लाह तआला सही रहनुमाई फ़रमाता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ख़ुलफ़ाए राशिदीन के मर्तबा तथा मुक़ाम और बुज़ुर्गी को इस तरह वर्णन फ़रमाया है। एक जगह आप फ़रमाते हैं

"मैं तो यह जानता हूँ कि कोई शख़्स मोमिन और मुसलमान नहीं बन सकता जब तक अबूबकर, उम्र, उसमान, अली रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन जैसा रंग पैदा न हो। वह दुनिया से मुहब्बत न करते थे बल्कि उन्होंने अपनी ज़िन्दगियां ख़ुदा तआला की राह में वक़्फ़ की हुई थीं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 8 पृष्ठ 260-261)

अत: यह मुक़ाम है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की नज़र में कि वास्तविक मोमिन और मुसलमान बनने के लिए इन चारों खलीफ़ाओं को अपने लिए आदर्श बनाना होगा। जब यह हो तो फिर कहाँ फ़िर्क़ा और कहाँ मसलक? इसकी क्या बेहस रह जाती है? अत: जमाअत अहमदिया का तो यह अक़ीदा है कि यह सब हमारे लिए आचरण हैं और जब यह अक़ीदा हो तो क्या जमाअत अहमदिया ही एक ऐसी जमाअत नहीं रह जाती जो मुसलमानों के बीच अन्तर ख़त्म करके उनमें वहदत पैदा करने वाली जमाअत है। चारों ख़ुलफ़ाए राशदीन का एक मुक़ाम और मर्तबा है। हर एक के मुक़ाम तथा मर्तबा को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने विभिन्न जगहों पर बड़े विस्तार से वर्णन फ़रमाया है। हर एक के इस मुक़ाम को पहचानने के लिए मैं कुछ उद्धरण पेश करता हूँ ताकि नए आने वालों और नौजवानों को भी समझ आ जाए कि हमारा मसलक क्या है। क्या हम यक़ीन करते हैं। क्या हमारी आस्था है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"उस युग में भी मुसैलमा ने अर्थात आरम्भ में हज़रत अबू बकर रज़ि के युग में मुसैलमा ने इबाहत (इन्कार) के रंग में लोगों को जमा कर रखा था। ग़लत किस्म की व्याख्याएं करके, ग़लत बातों को जायज़ क़रार देकर सिर्फ़ लोगों को इकट्ठा करने के लिए अपने साथ मिलाया हुआ था। फ़रमाया कि ऐसे समय में हज़रत अबू बकर रज़ि ख़लीफ़ा हुए तो इन्सान ख़्याल कर सकता है कि कितनी मुश्किलें पैदा हुई होंगी। यदि वह मज़बूत दिल न होता अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ि और हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ईमान का रंग उसके ईमान में न होता तो बहुत ही मुश्किल पड़ती और घबरा जाता लेकिन सिद्दीक़ नबी की हमसाया था। हमसाया अर्थात उसकी छाया पड़ रही थी। आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के आचरण का प्रभाव उस पर पड़ा हुआ था और दिल नूरे यक़ीन से भरा हुआ था। इसलिए वह बहादुरी और दृढ़ता दिखाई कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद उसका उदाहरण मिलना मुश्किल है। उनकी ज़िन्दगी इस्लाम की ज़िन्दगी थी। यह ऐसा मसला है कि इस पर किसी लम्बी बेहस की ज़रूरत ही नहीं। उस युग के हालात पढ़ लो और फिर जो इस्लाम की सेवा अबूबकर रज़ी अल्लाह अन्हो ने की है उसका अंदाज़ा कर लो। मैं सच कहता हूँ कि अबूबकर सिद्दीक़ रज़ी अल्लाह अन्हो इस्लाम के लिए दूसरे आदम हैं। मैं यक़ीन रखता हूँ कि यदि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद अबू बकर रज़ि का वजूद न होता तो इस्लाम भी न होता। अर्थात दुश्मन के हमलों से बचाने के लिए, शरीयत को सुरक्षित करने के लिए उस वक़्त अल्लाह तआला ने हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ को ही खड़ा किया था और आप ने इस्लाम के वजूद को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़ास तर्बीयत और विशेष सम्बन्ध के कारण से ज़िन्दगी बख़्शी और दुश्मन के हमले को असफल तथा नामुराद किया। फ़रमाया कि अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि का बहुत बड़ा उपकार है कि उसने इस्लाम को दोबारा स्थापित किया। अपनी ईमानी

शक्ति से समस्त बाग़ियों को सज़ा दी और अमन को स्थापित कर दिया। इसी तरह पर जैसे ख़ुदा तआला ने फ़रमाया और वादा किया था कि मैं सच्चे ख़लीफ़ा पर शान्ति को स्थापित करूँगा। यह भविष्यवाणी हज़रत सिद्दीक़ रज़ि की ख़िलाफ़त पर पूरी हुई और आसमान ने और ज़मीन ने व्यावहारिक रूप से गवाही दे दी। अत: यह सिद्दीक़ की व्याख्या है कि इस में सच्चाई इस मर्तबा और कमाल की होनी चाहिए।

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 380-381)

फिर हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह तआला के गुणों और स्थान का वर्णन करते हुए हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर फ़रमाते हैं।

"हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह अन्हो का दर्जा जानते हो कि सहाबा मैं कितना बड़ा है। यहां तक कि कई बार उनकी राय के अनुसार क़ुरआन शरीफ़ नाज़िल हो जाया करता था और उनके हक़ में यह हदीस है कि शैतान उमर रज़ि के साया से भागता है। दूसरी यह हदीस है कि यदि मेरे बाद कोई नबी होता तो उमर रज़ि होता। तीसरी यह हदीस है कि पहली उम्मतों में मुहद्दिस होते रहे हैं यदि इस उम्मत में कोई मुहद्दिस है तो वह उमर रज़ि है।"

(इज़ाला औहाम, रुहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 219)

फिर एक स्थान हज़रत अबू बकर रज़ि , हज़रत उमर रज़ि और हज़रत उसमान रज़ि का वर्णन करते हुए सामूहिक रूप से आप ने फ़रमाया कि

"मेरे रब्ब ने मुझ पर यह प्रकट किया कि सिद्दीक़ और फ़ारूक़ और उस्मान (रज़ियल्लाहु अन्हुम) सदाचारी और मोमिन थे तथा उन लोगों में से थे जिन्हें अल्लाह ने चुन लिया और जो कृपालु ख़ुदा की अनुकंपाओं से विशिष्ट किए गए और अधिकांश मारिफ़त रखने वालों ने उनकी ख़ूबियों की गवाही दी।

उन्होंने बुज़ुर्ग एवं सर्वश्रेष्ठ ख़ुदा की प्रसन्नता के लिए देश-त्याग किया प्रत्येक युद्ध की भट्टी में प्रविष्ट हुए और गर्मी के मौसम की दोपहर की गर्मी तथा सर्दियों की रात की ठंडक की परवाह न की बल्कि नवोदित युवकों की तरह धर्म के मार्गों पर अपनी चाल में लीन हो गए और अपनों तथा ग़ैरों की ओर न झुके तथा समस्त लोकों के प्रतिपालक ख़ुदा के लिए सब को अलविदा कह दिया। उन के कर्मों में सुगंध तथा उनके कार्यों में खुशबू है और यह सब कुछ उनके पदों के उद्यानों तथा उनकी नेकियों की पुष्प वाटिकाओं की ओर मार्ग-दर्शन करता है और उनकी सवेरे की मृदुल-मंद समीर अपने सुगंधित झोकों से उनके रहस्यों का पता देती है और उनके प्रकाश अपनी पूर्ण आभाओं से हम पर प्रकट होते हैं।

(सिर्रुलख़िलाफा उर्दू अनुवाद पृष्ठ 25-26 रुहानी ख़ज़ाइन भाग 8 पृष्ठ 326)

ये जो बहुत सारे हवाले हैं उनमें से जो मैं पढ़ रहा हूँ "सिर्रुलख़िलाफा" के हैं। यह अरबी की किताब है। अरबी अनुवाद करने वाले फ़िलहाल तो शायद फ़ौरी तौर पर इस स्तर का अनुवाद नहीं कर सकेंगे जब दुबारा repeat हो तो असल किताब से यह हवाले लेकर अनुवाद कर दें।

हज़रत अली रज़ि के उपकारों और आपके मुक़ाम का वर्णन करते हुए हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

" आप रज़िअल्लाहु अन्हु संयमी, पवित्र अन्त:करण तथा उन लोगों में से थे जो कृपालु ख़ुदा के यहां सर्वाधिक प्रिय होते हैं। और आप क़ौम के चुने हुए और युग के सरदारों में से थे। आप आधिपत्य रखने वाले ख़ुदा के शेर, कृपालु ख़ुदा के योद्धा, दानी, पवित्र, हृदय थे। आप ऐसे अद्वितीय बहादुर थे जो युद्ध के मैदान में अपना स्थान नहीं छोड़ते थे चाहे उन के मुकाबले में शत्रुओं की एक सेना हो। आप ने सम्पूर्ण आयु ग़रीबी में व्यतीत की और मानव जाति के संयम के पद की चरमसीमा तक पहुंचे। आप धन-दौलत प्रदान करने, लोगों के शोक और चिन्ताओं को दूर करने, तथा अनाथों, असहायों, और पड़ोसियों की देखभाल करने में प्रथम श्रेणी के मर्द थे। आप ने युद्धों में भिन्न-भिन्न प्रकार के वीरता के जौहर दिखाए थे। तीर और तलवार के युद्ध में आप से आश्चर्यजनक घटनाएं प्रकट होती थीं। इसके साथ-साथ आप अत्यन्त मृदुल भाषी और सरस-सुबोध वक्ता भी थे आप का बयान दिलों की गहराई में उतर जाता और तर्कों के प्रकाश से उसका चेहरा चमक जाता। आप भिन्न-भिन्न प्रकार की वर्णन शैलियों पर समर्थ थे और जो आप से इनमें मुकाबला करता तो उसे एक पराजित व्यक्ति की तरह आप से विवशता व्यक्त करनी पड़ती। आप हर ख़ूबी में और सरसता एवं सुबोधता की शैलियों में पूर्ण थे और जिसने आप की ख़ूबी का इन्कार किया तो उसने निर्लज्जता का मार्ग अपनाया।"

(सिर्रुलख़िलाफा उर्दू अनुवाद पृष्ठ108 से110 रुहानी ख़ज़ाइन भाग 8 पृष्ठ 358)

फिर हज़रत अली के मुक़ाम और ख़िलाफ़त के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"इसमें कणभर सन्देह नहीं कि हज़रत अली[रज़ि॰] (सच के) अभिलाषियों का आशा-स्थल और दानशील लोगों का अद्वितीय उदाहरण तथा (ख़ुदा के) बन्दों के लिए ख़ुदा की हुज्जत थे तथा अपने युग के लोगों में उत्तम इन्सान और देशों को रोशन करने के लिए अल्लाह के नूर थे। परन्तु आप की ख़िलाफ़त का दौर अमन और शान्ति का युग न था बल्कि उपद्रवों, अत्याचारों और ज़ुल्म के सीमा से अधिक बढ़ जाने की तीव्र हवाओं का युग था। जन सामान्य आप की और इब्ने अबी सुफ़ियान की ख़िलाफ़त के बारे में मतभेद करते थे और इन दोनों की ओर आश्चर्य-चकित व्यक्ति के समान टकटकी लगाए बैठे थे तथा कुछ लोग इन दोनों को आकाश के फ़र्क़द नामक दो सितारों के समान समझते थे। और दोनों को श्रेणी में एक समान समझते थे परन्तु सच यह है कि हक़ (अली) मुर्तज़ा[रज़ि॰] के साथ था। और जिसने आपके काल में (दौर में) आप से युद्ध किया तो उसने विद्रोह और उद्दण्डता की।

(सिर्रुलख़िलाफा उर्दू अनुवाद पृष्ठ 95-96)

फिर चारों ख़ुलफ़ाए राशिदीन की इस्लाम और क़ुरआन की सुरक्षा और इस अमानत का हक़ अदा करने के मुक़ाम का ज़िक्र फ़रमाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हैं कि

"यह अक़ीदा ज़रूरी है कि हज़रत सिद्दीक़ अकबर रज़ी अल्लाह तआला अन्हो और हज़रत फ़ारूक़ उम्र रज़ी अल्लाह तआला अन्हो और "हज़रत ज़ुन्नूरैन" अर्थात हज़रत उसमान रज़ी अल्लाह तआला अन्हो और हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ी अल्लाह तआला अन्हो सब के सब वास्तव में धर्म में अमीन थे। अबूबकर रज़ी अल्लाह तआला अन्हो जो इस्लाम के दूसरे आदम हैं और ऐसा ही हज़रत उम्र फ़ारूक़ और हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाह अन्हुमा यदि धर्म में सच्चे अमीन न होते तो आज हमारे लिए मुश्किल था जो क़ुरआन शरीफ़ की किसी एक आयत को भी अल्लाह की तरफ से कह सकते।"

(मक्तूबात अहमद भाग 2 पृष्ठ 151 मकतूब नम्बर 2 बनाम हज़रत नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहिब रज़ि)

फिर इन चारों खलीफ़ा का वर्णन फ़रमाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि

"ख़ुदा की क़सम वे ऐसे लोग हैं जो कायनात (ब्रह्माण्ड) में सर्वश्रेष्ठ सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सहायता के लिए मृत्यु के मैदानों में डट गए और उन्होंने अल्लाह के लिए अपने बापों और बेटों को छोड़ दिया और उन्हें तेज़ धार वाली तलवारों से टुकड़े-टुकड़े कर दिया और अपने प्रियजनों से युद्ध किया और उन के सर काट दिए और ख़ुदा के मार्ग में अपने उत्तम माल और प्राण न्योछावर किए। परन्तु इसके बावजूद वे अपने कर्मों की कमी पर रोते और बहुत शर्मिन्दा थे, उनकी आंख ने भरपूर नींद का आनन्द नहीं लिया परन्तु बहुत थोड़ा जो आराम की दृष्टि से जान का अनिवार्य अधिकार है, वे नेमतों के रसिया नहीं थे। फिर तुम कैसे सोचते हो कि वे अन्याय करते थे, माल हड़पते थे न्याय नहीं करते थे और अत्याचार-व-अन्याय करते थे। यह सिद्ध हो चुका है कि वे कामवासना संबंधी इच्छाओं से बाहर आ चुके थे और वे हमेशा ख़ुदा में फ़ना (लीन) लोग थे।

(सिर्रुलख़िलाफा उर्दू अनुवाद पृष्ठ108 से110 रुहानी ख़ज़ाइन भाग 8 पृष्ठ 329)

अत: यह समझ है जो इन चारों खुलफ़ा के मुक़ाम तथा मर्तबा की हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें दी और यही वह स्थान है जब हर मुसलमान इन बुज़ुर्गों को देगा तो वास्तविक मुसलमान कहलाएगा और आपस के मतभेद को ख़त्म करके एक उम्मत का हिस्सा बनेगा वर्ना हमारे मतभेद इस्लाम को तो कोई फ़ायदा नहीं पहुंचाएंगे, हाँ दुश्मन उनसे ज़रूर लाभ उठाएगा और वह लाभ उठा रहा है। आजकल हम यही देख रहे हैं। अत: इस्लाम की यदि कोई सेवा इस ज़माना में हो सकती है, इस्लाम की सुरक्षा की यदि इच्छा है तो फिर उस अल्लाह के पहलवान के साथ जुड़ कर ही हो सकती है जिसे इस युग में अल्लाह तआला ने इस काम के लिए भेजा है।

जैसा कि मैंने कहा आजकल हम मुहर्रम के महीने से गुज़र रहे हैं। कल या परसों दस मुहर्रम भी है जिसमें हज़रत हुसैन रज़ि की शहादत के हवाले से शीया अपनी भावनाओं का इज़्हार भी करते हैं। अवश्य यह एक ज़ालिमाना कर्म था जिस तरह हज़रत हुसैन को शहीद किया गया। जब इन भावनाओं का इज़्हार शीया लोग करते हैं या आम हालात में भी शीया लोग के हज़रत हुसैन रज़ि के बारे में, हज़रत अली रज़ि के बारे में जो भावनाएं हैं तो प्राय हमारे बारे में या हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में यह समझा जाता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

ने या आप की जमाअत ने नबुव्वत के ख़ानदान मुक़ाम को नहीं पहचाना। इस ग़लतफ़हमी को जमाअत अहमदिया हमेशा दूर करने की कोशिश भी करती रही है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हज़रत अली रज़ि के बारे में जो फ़रमाया है और अभी मैंने कुछ हवाले पेश भी किए हैं। इस से इसका स्पष्टीकरण भी हो जाती है कि हज़रत अली रज़ी अल्लाह तआला अन्हो का मुक़ाम तथा मर्तबा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की नज़र में क्या था लेकिन साथ ही यह भी कि हम इस बात पर भी यक़ीन रखते हैं कि बाक़ी तीन खलीफ़ा भी सच्चे थे। बहरहाल इस वक़्त मैं इस हवाले से ,हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तहरीरों और उपदेशों के हवाले से भी कुछ वर्णन करूँगा कि आप की नज़र में नबुव्वत के ख़ानदान का क्या स्थान था और इस बारे में आपने जमाअत को क्या नसीहत फ़रमाई है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी किताब "सिर्रुलख़िलाफ़ा" मैं हज़रत अली रज़ि और ख़ानदान नबुव्वत के बारे में यह तहरीर फ़रमाई है। हज़रत अली रज़ि के बारे में फ़रमाया कि

आप असहायों की हमदर्दी की तरफ़ प्रेरणा दिलाते और भाग्यतुष्ट लोगों तथा दरिद्रों को खाना खिलाने का आदेश देते। आप अल्लाह के सानिध्य प्राप्त बन्दों में से थे और इसके साथ-साथ आप फ़ुर्क़ान (हमीद) की मारिफ़त के जाम पीने वालों में पहले लोगों में से थे और आप को क़ुर्आन की बारीकियों को समझने में एक अदभुत समझ प्रदान की गयी थी। मैंने जागने की अवस्था में उन्हें देखा है न कि नींद में। फिर (उसी हालत में) आप ने अन्तर्यामी ख़ुदा की किताब की तफ़्सीर मुझे प्रदान की और फ़रमाया – "यह मेरी तफ़्सीर है और यह अब आप को दी जाती है। अत: आप को इस दिए जाने पर मुबारक हो।" जिस पर मैंने अपना हाथ बढ़ाया और वह तफ़्सीर ले ली और मैंने प्रदान करने वाले शक्तिमान ख़ुदा का शुक्र अदा किया और मैंने आप को पैदायश में संतुलित ओर स्वभाव में पुख़्ता और विनम्र व्यवहार करने वाला विनम्र स्वभाव, प्रकाशमान और रोशन पाया और मैं यह क़सम खाकर कहता हूं कि आप मुझ से बड़े प्रेम और मुहब्बत से मिले। और मेरे दिल में यह बात डाली गई कि आप मुझे और मेरी आस्था को जानते हैं और मैं अपनी आस्था और मत में शियों से जो मतभेद रखता हूं वह उसे भी जानते हैं परन्तु आपने किसी भी प्रकार की अप्रसन्नता एवं खिन्नता की अभिव्यक्ति नहीं की और न ही (मुझ से) विमुख हुए बल्कि वह मुझ से मिले और शुद्ध प्रेमियों की तरह मुझ से प्रेम किया और उन्होंने सच्चे, स्वच्छ दिल रखने वाले लोगों की भांति प्रेम को अभिव्यक्त किया। और आपके साथ हुसैन बल्कि हसन[रज़ि॰] और हुसैन[रज़ि॰] दोनों तथा सय्यिदुर्रुसुल ख़ातमुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी थे और उनके साथ एक अत्यन्त सुन्दर नेक, प्रतापी, मुबारक, सदाचारी, सम्मानीय, ज़ाहिर-व-बाहर साक्षात प्रकाश जवान सौम्य महिला भी थीं, जिन्हें मैंने शोक से भरा हुआ पाया, परन्तु वह उसे छुपाए हुए थीं। मेरे दिल में डाला गया कि आप फ़ातिमा अज़्हुज़ुरा[रज़ि॰] हैं। आप मेरे पास आईं, मैं लेटा हुआ था। तो आप बैठ गईं और आप ने मेरा सर अपनी रान पर रख लिया और प्रेम को अभिव्यक्त किया। मैंने देखा कि वह मेरे किसी ग़म (शौक) के कारण शोकग्रस्त दुखित हैं और बच्चों के कष्टों के समय मांओं की तरह प्रेम, मुहब्बत और बेचैनी व्यक्त कर रही हैं।

इस पर गंदा ज़हन मौलवी जो हैं यह एतराज़ करते रहते हैं कि आप ने लिखा है कि हज़रत फ़ातिमा रज़ि ने मेरा सिर अपनी रान पर रख लिया। बच्चे से एक माँ की मुहब्बत का इज़्हार जो होता है यह तो इस का वर्णन हो रहा है लेकिन इन गंदे ज़हनों को क्या कहे कोई। और साधारण मुसलमान उनकी बातें सुन कर समझते हैं कि हज़रत फ़ातिमा ज़ुहरा का नऊज़ बिल्लाह अपमान किया है हालाँकि आगे जाकर इसकी और अधिक स्पष्टीकरण भी हो जाएगा कि आप फ़र्मा रहे हैं कि किस तरह आप एक माँ का व्यवहार मुझसे कर रही हैं।

बहरहाल फिर आप फ़रमाते हैं फिर

"फिर मुझे बताया गया कि धर्म के संबंध में उनके नज़दीक मेरी हैसियत बेटे के समान है और मेरे दिल में विचार आया कि उनका शोकग्रस्त होना इस बात पर संकेत है कि मैं क़ौम, देशवासियों और शत्रुओं से अत्याचार देखूंगा। फिर हसन और हुसैन दोनों मेरे पास आए और मुझ से भाइयों की तरह प्रेम-व्यक्त करने लगे तथा हमदर्दी करने वालों के समान मुझ से मिले। और यह कश्फ़ जागने की अवस्था के कश्फ़ों में से था। इस पर कई वर्ष गुज़र चुके हैं, और मुझे हज़रत अली[रज़ि॰] तथा हज़रत हुसैन[रज़ि॰] के साथ एक उत्तम अनुकूलता है और उस अनुकूलता की वास्तविकता को पूरब और पश्चिम के प्रतिपालक के अतिरिक्त कोई नहीं जानता। और मैं हज़रत अली[रज़ि॰] और आपके दोनों बेटों से प्रेम करता हूं तथा जो उन से शत्रुता रखे उस से मैं शत्रुता रखता हूं। इसके बावजूद मैं ज़ुल्म-व-सितम करने वालों में से नहीं और यह मेरे लिए संभव नहीं कि मैं उस से मुंह फेरूं जो अल्लाह ने मुझ पर प्रकट किया और न ही मैं सीमा का अतिक्रमण करने वालों में से हूं।

(सिर्रुलख़िलाफ़ा उर्दू अनुवाद पृष्ठ110 से 112)

फिर एक जगह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"मैंने इस क़सीदा में जो मैंने "इमाम हुसैन रज़ी अल्लाह अन्हो के बारे में लिखा है या हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में वर्णन किया है यह इन्सानी कार्रवाई नहीं।" यह तो अल्लाह तआला की तरफ़ से मुझे बताया गया है। "ख़बीस है वह इन्सान जो अपने नफ़्स से कामिलों और रास्तबाज़ों पर आरोप लगाता है। मैं विश्वास रखता हूँ कि कोई इन्सान हुसैन जैसे या हज़रत ईसा जैसे सच्चों को बुरा भला कह करके एक रात भी ज़िन्दा नहीं रह सकता और وعید مَنْ عَادَ وَلِیًّا بدست بدست उसको पकड़ लेता है। अत: मुबारक वह जो आसमान की बातों को समझता है और ख़ुदा की हिक्मत अमलियों पर ग़ौर करता है।"

(एजाज़ अहमदी ज़मीमा नुज़ूलुल मसीह, रुहानी ख़ज़ायन भाग 19 पृष्ठ 149)

यह हदीस का जो हवाला आपने दिया इस से अभिप्राय है जिसने मेरे वली से दुश्मनी की

مَنْ عَادٰی وَلِیًّا فَقَدْ اٰذَنْتُهٗ بِالْحَرْبِ

(सही अल-बुख़ारी किताबुल रिक़ाक बाब अत्तवाज़ा हदीस 6502)

कि जिसने मेरे वली से दुश्मनी की तो मैंने उसके साथ जंग का एलान कर दिया। किसी से जब मुहब्बत का इज़्हार होता है और मुहब्बत का यह इज़्हार जब ज़ाती मज्लिस में हो जहां और कोई न हो तो वह मुहब्बत का इज़्हार दिल की आवाज़ होती है। वैसे तो पवित्र आदमी का, जिसको अल्लाह तआला ने बहुत ज़्यादा स्थान दिया है हर शब्द ही दिल की आवाज़ है लेकिन आरोप लगाने के लिए यह जानना चाहिए कि घर में बैठे हुए आप का क्या इज़्हार था। आप ने सिर्फ़ लेखनी में या उपदेशों में या मज्लिसों में हज़रत इमाम हुसैन का वर्णन नहीं फ़रमाया या आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ानदान से मुहब्बत का इज़्हार ज़ाहिरी तौर पर नहीं किया बल्कि घरेलू मज्लिस में बच्चों के साथ बैठ कर भी इन भावनाओं का प्रकटन किया।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ी अल्लाह तआला अन्हो वर्णन करते हैं कि

"रसूल पाक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ इसी इश्क़ के कारण से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को आप की आल अर्थात घर वाले तथा औलाद और आपके सहाबा के साथ भी बेपनाह मुहब्बत थी। अत: एक बार जब मुहर्रम का महीना था और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने बाग़ में एक चारपाई पर लेटे हुए थे आप ने हमारी बहन मुबारका बेगम सल्महा और हमारे भाई मुबारक अहमद मरहूम को जो सब बहन भाईयों में छोटे थे अपने पास बुलाया और फ़रमाया। "आओ मैं तुम्हें मुहर्रम की कहानी सुनाऊँ।" फिर आप ने बड़े दर्दनाक अंदाज़ में हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाह अन्हो की शहादत की घटनाएं सुनाईं। आप यह घटनाएं सुनाते जाते थे और आप की आँखों से आँसू जारी थे और आप अपनी उंगलियों के पोरों से अपने आँसू पोंछते जाते थे। इस दर्दनाक कहानी को ख़त्म करने के बाद आप ने बड़े दुख के साथ फ़रमाया " अपवित्र यज़ीद ने यह ज़ुल्म हमारे नबी करीम के नवासे पर करवाया। परन्तु ख़ुदा ने भी इन ज़ालिमों को बहुत शीघ्र अपने अज़ाब में पकड़ लिया। उस समय आप पर अजीब कैफ़ीयत छाई थी और अपने आक़ा के जिगर के टुकड़े की दर्दनाक शहादत की कल्पना से आपका दिल बहुत बेचैन हो रहा था और यह सब कुछ रसूले पाक के इश्क़ के कारण से था।"

(सीरत तय्यबा लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि पृष्ठ 36-37)

इस बारे में ख़ुद हज़रत नवाब मुबारका बेगम साहिबा रज़ि भी एक स्थान पर इसी घटना को वर्णन फ़रमाती हैं क्योंकि उनके साथ यह हुआ था। कहती हैं: आप, हज़रत

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,

JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बाग़ में चारपाई पर लेटे हुए थे। मैं और मुबारक ने एक कछुवा पकड़ा। आप को दिखाने के लिए लाए। आपने उसको तो नज़र अंदाज किया और फिर फ़रमाया कि आओ मैं तुम्हें मुहर्रम की कहानी सुनाऊँ। फिर कहती हैं हम दोनों पास बैठ गए। यह महीना मुहर्रम का पहला अशरा था। आप ने शहादत हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की घटनाएं सुनानी शुरू कीं। फ़रमाया वह हमारे नबी करीम के नवासे थे। उनको मुनाफ़िक़ों ने, ज़ालिमों ने भूखा प्यासा कर्बला के मैदान में शहीद कर दिया। फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का बयान फ़र्मा रही हैं कि फिर फ़रमाया उस दिन आसमान लाल हो गया था। चालीस दिन के अन्दर क़ातिलों, ज़ालिमों को ख़ुदा तआला के ग़ज़ब ने पकड़ लिया। कोई कौड़ी हो कर मरा। किसी पर कोई अज़ाब आया और किसी पर कोई। यज़ीद के वर्णन पर, यज़ीद पलीद फ़रमाते थे। काफ़ी लंबी घटनाएं आप ने सुनाईं। हालत यह थी कि आप रो रहे थे। आँसू बहने लगते थे जिनको अपनी शहादत की उंगली से पोंछते थे।

(उद्धरित तहरीराते मुबारका लेखक हज़रत सय्यदा नवाब मुबारका बेगम साहिबा रज़ि ,पृष्ठ222)

इस ज़ुल्म की दास्तान को जब इन्सान सुनता है तो रौंगटे खड़े हो जाते हैं। जब दुश्मन ने विजय पा लिया तो लिखा है कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ि ने अपने घोड़े का रुख दरिया फ़ुरात की तरफ़ किया या करने की कोशिश की तो आप का रास्ता रोक लिया गया। एक आदमी ने आपको तीर मारा जो आपकी ठोढ़ी के ऊपर आ के लगा बड़ा गहरा ज़ख़्म हो गया। फिर हमला करने वालों ने और हमले किए और आपको शहीद कर दिया। रावी वर्णन करता है कि मैंने शहादत से पहले आप को यह कहते सुना कि अल्लाह की क़सम ! मेरे बाद ख़ुदा के बन्दों में से किसी भी ऐसे बंदे को क़तल नहीं करोगे जिसके क़तल पर मेरे क़तल से ज़्यादा ख़ुदा तआला तुम पर नाराज़ हो। फिर हज़रत इमाम हुसैन रज़ि ने फ़रमाया कि अल्लाह की कसम मुझे तो उम्मीद है कि अल्लाह तआला तुम्हें अपमानित करके मुझ पर करम करेगा और फिर मेरा बदला तुमसे इस तरह लेगा कि तुम हैरान रह जाओगे। इन ज़ालिमों ने आप से और आपके ख़ानदान से क्या सुलूक किया। शहीद किया और शहीद करने के बाद फिर ख़ेमों को लूटा। औरतों के सिरों से चादरें उतारीं। शहीद करने के बाद उनके कमांडर ने बुलाया कि हज़रत इमाम हुसैन की लाश लिटाई हुई है इस लाश पर से कौन घोड़ों समेत गुज़रेगा और दस घोड़े तैयार हुए और उनको गुज़ार कर लाश को अपमानित किया गया। आपकी कमर की हड्डियों को और पसलियों को चकना-चूर कर दिया गया। एक रिवायत के अनुसार आपके जिस्म पर तैंतीस ज़ख़्म भाले और तैंतालीस ज़ख़्म तलवार के थे और तीरों के ज़ख़्म इसके इलावा थे। फिर आपका सिर काट कर गवर्नर के पास भेजा गया और उसने यह सिर कूफ़ा में लटकवाया।

(तारीख़ तिबरी भाग 4 अनुवाद पृष्ठ 253 से 257, 260 प्रकाशन दारुल इशाअत कराची 2003 ई)

(तारीख़ इस्लाम हिस्सा 2 लेखक अकबर शाह नजीबाबादी पृष्ठ 76 नफ़ीस एकेडेमी उर्दू बाज़ार कराची 1998 ई)

ज़ुल्म की इंतिहा है कोई ख़बीस तरीन दुश्मन भी इस तरह न करे। यह तो संक्षिप्त मैंने वर्णन किया है। जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वर्णन फ़र्मा रहे थे तो उस समय इस घटना पर ग़म से आपके आँसूओं की झड़ी लगी हुई थी। अत: किस तरह कह सकते हैं कि हम नऊज़ बिल्लाह ख़ानदाने नबुव्वत से मुहब्बत नहीं करते या उसकी समझ नहीं रखते बल्कि एक अवसर पर जब आपको एक अवसर पर पता लगा कि किसी ने हज़रत इमाम हुसैन रज़ि के बारे में ग़लत शब्द प्रयोग किए हैं आपने सख़्ती से जमाअत को भी नसीहत फ़रमाई। अत: आप ने फ़रमाया कि

"स्पष्ट हो कि किसी शख़्स के एक कार्ड के माध्यम से जो पोस्टल कार्ड होता है इसके द्वारा से "मुझे सूचना मिली है कि कुछ नादान आदमी जो अपने आपको मेरी जमाअत के तरफ़ मंसूब करते हैं, हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाह अन्हो के बारे में ये शब्द मुँह पर लाते हैं कि नऊज़ बिल्लाह हुसैन रज़ि इस कारण से कि उसने समय के ख़लीफ़ अर्थात यज़ीद से बैअत नहीं की बाग़ी था और यज़ीद सच्चाई पर था।" आपने

لَعۡنَتُ اللّٰہِ عَلَی الۡکَاذِبِیۡنَ۔

मुझे उम्मीद नहीं कि मेरी जमाअत के किसी सच्चे के मुँह से ऐसे ख़बीस शब्द निकले हों परन्तु साथ इसके मुझे यह भी दिल में ख़्याल गुज़रता है कि चूँकि अक्सर शीया ने अपने विरद तबर्रे और लअनत में मुझे भी शरीक कर लिया है इसलिए कुछ आश्चर्य नहीं कि किसी नादान बेतमीज़ ने मूर्खतापूर्ण बात के जवाब में मूर्खतापूर्ण बात कह दी हो जैसा कि कुछ जाहिल मुसलमान किसी ईसाई की बदज़ुबानी के मुक़ाबला पर जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान में करता है हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में कुछ कठोर शब्द कह देते हैं। बहरहाल मैं इस इश्तिहार के माध्यम से अपनी जमाअत को सूचना देता हूँ कि हम विश्वास रखते हैं कि यज़ीद एक नापाक तबीयत वाला दुनिया का कीड़ा और ज़ालिम था और जिन अर्थों की दृष्टि से किसी को मोमिन कहा जाता है वे अर्थ उस में मौजूद न थे। मोमिन बनना कोई आसान बात नहीं है। अल्लाह तआला ऐसे व्यक्तियों के बारे में फ़रमाता है।

قَالَتِ الۡاَعۡرَابُ اٰمَنَّا قُلۡ لَّمۡ تُؤۡمِنُوۡا وَلٰکِنۡ قُوۡلُوۡۤا اَسۡلَمۡنَا

(अलहुजरात15)

मोमिन वे लोग होते हैं जिनके कर्म उनके ईमान पर गवाही देते हैं। जिनके दिल पर ईमान लिखा जाता है और जो अपने ख़ुदा और उसकी रज़ा को हर एक चीज़ पर प्रथम कर लेते हैं और तक़्वा की सूक्ष्म और तंग राहों को ख़ुदा तआला के लिए धारण करते और उसकी मुहब्बत में लीन हो जाते हैं और हर एक चीज़ जो बुत की तरह ख़ुदा से रोकती है चाहे वह अख़लाक़ी हालत हो या बुरे कर्म हों या ग़फ़लत और सुस्ती हो सबसे अपने आप को दूर ले जाते हैं लेकिन बदनसीब यज़ीद को ये बातें कहाँ हासिल थीं। दुनिया की मुहब्बत ने उसको अंधा कर दिया था परन्तु हुसैन रज़ी अल्लाह अन्हो ताहिर(पवित्र) मुतहहर था और निसन्देह वह उन सम्मानीय लोगों में से है जिनको ख़ुदा तआला अपने हाथ से साफ़ करता और अपनी मुहब्बत से मामूर कर देता है और निसन्देह वह बेहशत के सरदारों में से है और उससे एक ज़रा द्वेष रखना ईमान को छीन लेने का कारण है और इस इमाम का तक़्वा और मुहब्बते इलाही और सब्र और दृढ़ता और पवित्रता और इबादत हमारे लिए उत्तम आदर्श है और हम इस मासूम की हिदायत के अनुकरण करने वाले हैं जो इसको मिली थी। तबाह हो गया वह दिल जो उसका दुश्मन है और कामयाब हो गया वह दिल जो व्यावहारिक रंग में उसकी मुहब्बत ज़ाहिर करता है और उसके ईमान और आचरण और बहादुरी और तक़्वा और दृढ़ता और मुहब्बत इलाही के समस्त नुक़ूश प्रतिबिम्बित तौर पर पूर्ण अनुकरण के साथ अपने अंदर लेता है जैसा कि एक साफ़ आईना में एक सुन्दर इन्सान का नक़्श। यह लोग दुनिया की आँखों से छुपे हैं। कौन जानता है उनका सम्मान परन्तु वही जो उन में से हैं। दुनिया की आँख वह पहचान नहीं कर सकती क्योंकि वह दुनिया से बहुत दूर हैं। यही कारण हुसैन रज़ि की शहादत का था क्योंकि वह शनाख़्त नहीं किया गया। दुनिया ने किस नेक और सम्मान्नीय से उसके युग में मुहब्बत की ताकि हुसैन रज़ि से भी मुहब्बत की जाती। अत: यह बात निहायत दर्जा का दुर्भाग्य और बेईमानी में दाख़िल है कि हुसैन रज़ी अल्लाह अन्हो का अपमान किया जाए और जो शख़्स हुसैन रज़ि या किसी और बुज़ुर्ग की जो पवित्र इमामों में से है अपमान करता है या कोई बात उपहास का उनके बारे में अपनी ज़बान पर लाता है वह अपने ईमान को नष्ट करता है क्योंकि अल्लाह तआला उस व्यक्ति का दुश्मन हो जाता है जो उसके सम्मान्नीयों और प्यारों का दुश्मन है।"

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फ़त्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फ़त्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण के उदाहरण प्रस्तुत करो यहां तक कि सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ
धानू शेरपा
सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

(मजमूआ इश्तिहारात भाग 2 पृष्ठ 653-654 इश्तिहार नम्बर 270 तब्लीग़ुल हक़ प्रकाशन रब्वा)

अत: यह किस तरह हो सकता है कि ये सब कुछ सुनने के बाद हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को कहें कि आले मुहम्मद से मुहब्बत नहीं थी। जिस मुहब्बत की समझ आप को थी वह किसी और को नहीं हो सकती और यही आप ने फ़रमाया भी है । लेकिन जहां शीया अतिश्योक्ति की सीमा तक गए हैं वहां उनको हक़ीक़त भी आपने बताई है और जहां सुन्नी ग़लत हुए वहां उन्हें भी बताया कि सुधार करो। और यही हकम और अदल का काम है और इस्लाम की वास्तविक शिक्षा के फैलाने और प्रचलित करने के इसी काम के लिए अल्लाह तआला ने आपको भेजा था लेकिन इसके बावजूद ये जो दोनों बड़े पक्ष हैं ये अहमदियों को ही बुरा कहते हैं, हमें ही ज़ुल्मों का निशाना बनाया जाता है लेकिन इसके बावजूद हमने सब्र तथा दृढ़ता से इस काम को जारी रखना है जो हमारे सपुर्द है जिसके लिए हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत की है कि वास्तविक इस्लाम को दुनिया में फैलाएं। इस आचरण को सामने रखें जो हज़रत इमाम हुसैन रज़ि ने दिखाया।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने अपने एक शेअर में फ़रमाया था कि

वह तुमको हुसैन बनाते हैं और आप यज़ीदी बनते हैं
यह क्या ही सस्ता सौदा है दुश्मन को तीर चलाने दो।

(कलामे महमूद पृष्ठ 154)

अत: हमारी क़ुर्बानियां तो इंशा अल्लाह इस बार बेकार नहीं जाएँगी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक जगह फ़रमाया है कि मुझे जो हुसैन से सम्बन्ध तो है लेकिन नतीजा वह नहीं निकलेगा। अब जो इस बार नतीजे हैं वह उसके विपरीत हैं। क्योंकि अल्लाह तआला ने यही मुक़द्दर किया है कि सफलता मिले। इसलिए इस बार जो फ़तह है, ज़ाहरी फ़तह भी इंशा अल्लाह तआला, वह हुसैनी गुण रखने वालों की होगी और दुश्मन नाकाम तथा असफल होंगे।

(उद्धरित अलफ़ज़्ल इंटरनैशनल 31 दिसम्बर 2010 ई पृष्ठ 8 ख़ुतबा जुमा 10 दिसम्बर 2010 ई)

(उद्धरित ख़ुतबाते मसरूर भाग 8 पृष्ठ 635-636 ख़ुतबा 10 दिसम्बर 2010 ई)

अत: उसके लिए आजकल, खासतौर पर इस महीने में और हमेशा भी जबकि दुश्मनी भी आजकल ख़ासतौर पर पाकिस्तान में भी और दूसरी जगहों पे भी अपने चरम पर और ज़ोरों पर है हमें चाहिए कि दुआओं पर बहुत ज़ोर दें। दरूद शरीफ़ पढ़ने पर बहुत ज़ोर दें और जितना अल्लाह तआला के हुज़ूर हम झुकेंगे उतना ही शीघ्र अल्लाह तआला हमें विजय प्रदान करेगा, कामयाबी तथा सफलता नसीब फ़रमाएगा। इन दिनों में खासतौर पर दूसरे मुसलमानों के लिए भी दुआ करें। वे मुसलमान फ़िर्क़े एक दूसरे की गर्दनें काटने पर लगे हुए हैं और इन दिनों में खासतौर पर जब दस मुहर्म आती है तो तारीख़ अभी तक तो यही बता रही है कि कहीं न कहीं इमाम बारगाहों पर और ताज़ियों पर या विभिन्न जगहों पर हमले भी होते हैं और फिर कई लोगों को शहीद किया जाता है, धर्म के नाम पर शहीद किया जाता है तो अल्लाह तआला अक़्ल दे और कम से कम इस साल ऐसी सूचना कहीं से किसी भी देश से न मिले कि जहां मुसलमानों ने मुसलमानों को मारा हो और यह मुसलमान इस हक़ीक़त को भी शीघ्र पहचानने वाले हों कि इस्लाम की जो फ़तह अल्लाह तआला ने मुक़द्दर की है वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के माध्यम से ही की है और उनको यह समझ आ जाए कि हमारी कामयाबी अब इसी में है कि युग के इमाम और मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आ जाएं। अल्लाह तआला उनको तौफ़ीक़ भी प्रदान फ़रमाए।

(अलफ़ज़्ल इंटरनैशनल18 सितम्बर 2020 पृष्ठ 5 से 9)

☆ ☆ ☆ ☆

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

मल्फ़ूज़ात पृष्ठ 1 का शेष

तआला से सहायता को माँगना चाहिए। अत: ज़ाहरी माध्यमों की रिआयत ज़रूरी है। जो इसको छोड़ता है वह नेअमत का इन्कार करता है। देखो ! यह जीभ जो ख़ुदा तआला ने पैदा की है और नसों से इसको बनाया है। अगर ऐसी न होती तो हम बोल न सकते। ऐसी जीभ दुआ के लिए प्रदान की जो दिल के विचारों और इरादों तक को ज़ाहिर कर सके। अगर हम दुआ का काम जीभ से कभी न लें तो हमारी हतभागे हैं। बहुत सी बीमारियां ऐसी हैं कि अगर वह जीभ को लग जाएं तो वह सम्पूर्ण रूप से काम छोड़ बैठती है यह रहीमियत है। ऐसा ही दिल में विनय तथा विनम्रता की हालत रखी और सोचने और चिन्तन की शक्तियां रखी हैं। अत: याद रखो। अगर हम इन कुव्वतों और शक्तियों को खुला छोड़ कर दुआ करते हैं तो यह दुआ कुछ भी लाभदायक और कारगर न होगी। क्योंकि जब पहले अतिया से कुछ काम नहीं लिया तो दूसरे से क्या लाभ उठाएंगे, इस लिए اِھۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ से पहले اِیَّاکَ نَعۡبُدُ बता रहा है कि हमने तेरे पहले अतियों और शक्तियों को बेकार और बर्बाद नहीं किया। याद रखो ! रहमानियत की विशेषता यही है कि वह रहीमियत से फ़ैज़ उठाने के योग्य बना दे, इस लिए ख़ुदा तआला ने जो اُدۡعُوۡنِیۡۤ اَسۡتَجِبۡ لَکُمۡ (अल-मोमिन:61) फ़रमाया ये केवल मौखिक बातें नहीं है, बल्कि इन्सानी सम्मान उसी को चाहता है। माँगना इन्सान की विशेषता है और दुआ का स्वीकार करना अल्लाह तआला का। जो नहीं मांगता वह अत्याचारी है। दुआ एक ऐसी आनन्द दायक अवस्था है कि मुझे अफ़सोस होता है कि मैं किन शब्दों में उस मज़े और आनन्द को दुनिया को समझाऊं। यह तो महसूस करने ही से पता लगेगा। सार यह कि दुआ के लिए अनिवार्य बातों में से पहले ज़रूरी यह है कि नेक कर्म और आस्था पैदा करें। क्योंकि जो आदमी अपनी आस्थायों को ठीक नहीं करता और नेक कर्मों से काम नहीं लेता और दुआ करता है वह मानो ख़ुदा तआला की परीक्षा लेता है। तो बात यह है कि اِھۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ की दुआ में यह लक्ष्य है कि हमारे कर्मों को सम्पूर्ण और उत्तम कर और फिर यह कह कर कि صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡھِمۡ ۙ۬ और भी स्पष्ट कर दिया कि हम उस मार्ग की हिदायत चाहते हैं जो इनाम पाने वालों का मार्ग है और प्रकोप वाले गिरोह के मार्ग से बचा जिन पर बुरे कर्मों के कारण से अल्लाह का प्रकोप आ गया और الضَّآلِّیۡنَ कह कर यह दुआ की शिक्षा दी है कि इस से भी सुरक्षित रख कि तेरी सहायता के बिना भटकते फिरें।

एक और बात याद रखने के योग्य है कि इस जगह लफ्फो नश्र मुरत्तिब (एक के बाद दूसरा क्रम के नियम) है। पहले اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ कि अल्लाह सभी सम्पूर्ण गुणों का सार है। प्रत्येक ख़ूबी को अपने अन्दर रखने वाला और हर एक दोष और त्रुटि से पवित्र। दूसरा رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ। तीसरा الرَّحۡمٰنِ। चौथा الرَّحِیۡمِ। पांचवां مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ। अब इसके बाद जो निवेदन हैं वे इन पांचों के अधीन हैं। अब सिलसिला यूं शुरू होता है। اِیَّاکَ نَعۡبُدُ। यह वाक्य اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ के मुक़ाबला पर है। अर्थात हे अल्लाह तू जो सारे प्रशंसनीय गुणों का सार है और समस्त बुराइयों से पवित्र है। तेरी ही इबादत करते हैं। मुसलमान उस ख़ुदा को जानता है जिसमें वह समस्त ख़ूबियां जो इन्सानी ज़ेहन में आ सकती हैं मौजूद हैं और इस से उच्चतर और उच्चतर है क्योंकि यह सच्ची बात है कि इन्सानी अक़्ल और फ़िक्र और ज़ेहन ख़ुदा तआला के गुणों की सीमा हरगिज़-हरगिज़ नहीं कर सकते। हाँ तो मुसलमान ऐसे सम्पूर्ण गुणों वाले ख़ुदा को मानता है। समस्त क़ौमें मज्लिसों में अपने ख़ुदा का वर्णन करते हुए लज्जित हो जाती हैं और उन्हें लज्जित होना पड़ता है।

हिन्दुओं के निकट ईश्वर की धारणा

जैसे हिन्दुओं का ईश्वर जो उन्होंने माना है ओर कहा है कि वेदों से ऐसे ख़ुदा ही का पता लगता है। जब इसके बारे में वह यह वर्णन करेंगे कि उसने दुनिया का एक कण भी पैदा नहीं किया और न उसने रूहों को पैदा किया है, तो क्या ऐसे ख़ुदा के मानने वाले के लिए कोई स्थान रह सकता है। जब उसे कहा जाए कि ऐसा ख़ुदा अगर मर जाए तो क्या हानि है, क्योंकि जब ये चीज़ें अपना वजूद स्थायी रखती हैं और अपने आप स्थापित हैं फिर ख़ुदा की जिन्दगी की, उनकी जिन्दगी और स्थायित्व के लिए क्या ज़रूरत है। जैसे एक आदमी अगर तीर चलाए और वह तीर अभी जा ही रहा हो कि उस आदमी का दम निकल जाए तो बताओ उस तीर की हालत में क्या फ़र्क़ आएगा। हाथ से निकलने के बाद वह चलाने वाले के वजूद का मुहताज नहीं है। इसी तरह पर हिन्दुओं के ख़ुदा के लिए अगर यह माना जाए कि वह एक समय मर जाए तो कोई हिन्दू उस की मौत का नुक़्सान नहीं बता सकता। परन्तु हम ख़ुदा के लिए ऐसा मान नहीं कर सकते, क्योंकि अल्लाह के शब्द से ही पाया जाता है कि इस में कोई त्रुटि और बुराई न हो। ऐसा ही जब कि आर्या मानता है कि शरीर और रूहें अनादि हैं अर्थात हमेशा से हैं। हम कहते हैं कि जब तुम्हारी यह आस्था है फिर ख़ुदा की हस्ती का सबूत ही क्या दे सकते हो? अगर कहो कि उसने जोड़ा जाड़ा है तो हम कहते हैं कि जब तुम परमाणु और प्रकृति को

अनादि काल से मानते हो और उनके वजूद को अपने आप बना हुआ कहते हो तो फिर जोड़ना जाड़ना तो तुच्छ काम है। वह जुड़ भी सकते हैं और ऐसा जब वह यह शिक्षा बताते हैं कि ख़ुदा ने वेद में जैसे यह हुक्म दिया है कि अगर किसी औरत के यहाँ अपने पति से बच्चा पैदा न हो सकता हो तो वह किसी दूसरे से सहवास करके औलाद पैदा कर ले, तो बताओ ऐसे ख़ुदा के बारे में क्या कहा जाएगा? या जैसे यह शिक्षा पेश की जाए कि ख़ुदा किसी अपने प्रेमी और भगत को हमेशा के लिए मुक्ति अर्थात निजात नहीं दे सकता बल्कि महाप्रलय के समय उस को ज़रूरी होता है कि मुक्ति पाने वाले इन्सानों को फिर उसी आवागमन के चक्कर में डाले या जैसे ख़ुदा के बारे में यह कहना कि वह किसी को अपने फ़ज़्ल तथा उपकार से कुछ भी प्रदान नहीं कर सकता बल्कि हर एक आदमी को वही मिलता है जो उसके कर्मों के नतीजे हैं फिर ऐसे ख़ुदा की क्या ज़रूरत बाक़ी रहती है। अत: ऐसा ख़ुदा के मानने वाले को सख़्त शर्मिंदा होना पड़ेगा।

ईसाइयों के निकट ख़ुदा की धारणा

इसी तरह ईसाई भी जब यह पेश करेंगे कि हमारा ख़ुदा यसू है और फिर उसके बारे में वह यह वर्णन करेंगे कि यहूदियों के हाथों से उस ने मारें खाईं। शैतान उसे आज़माता रहा। भूख और प्यास का प्रभाव उस पर होता रहा। आख़िर नाकामी की अवस्था में फांसी पर चढ़ाया गया। तो कौन बुद्धिमान होगा जो ऐसे ख़ुदा के मानने के लिए तैयार होगा। अत: इसी तरह पर समस्त क़ौमें अपने स्वीकार किए हुए ख़ुदा का वर्णन करती हुई लज्जित होती हैं परन्तु मुसलमान कभी अपने ख़ुदा का वर्णन करते हुए किसी मज्लिस में लज्जित नहीं होता, क्योंकि जो ख़ूबी और उत्तम गुण है, वह उन के माने हुए ख़ुदा में मौजूद और जो कमी और त्रुटि है इस से वह पवित्र है। जैसा कि सूरह अलफ़ातिहा में अल्लाह को समस्त प्रशंसनीय गुणों से प्रशंसित क़रार दिया है। तो اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ के मुक़ाबला में اِيَّاكَ نَعْبُدُ है। इसके बाद है رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ रबूबियत का काम है तर्बीयत और तकमील। जैसे माँ अपने बच्चा की परवरिश करती है, उसको साफ़ करती है। हर किस्म के गन्द और गन्दगी से दूर रखती है और दूध पिलाती है। दूसरे शब्दों में यूं कहो कि वह उस की मदद करती है। अब उसके मुक़ाबला में यहां اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ फिर الرَّحْمٰنِ है जो बिना इच्छा , बिना निवेदन और बिना कर्मों के अपने फ़ज़्ल से देता है। यदि हमारे वजूद की बनावट ऐसी न होती तो हम सिज्दा न कर सकते और रुकू न कर सकते। इस लिए रबूबियत के मुक़ाबला में اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ फ़रमाया। जैसे बाग़ का बढ़ना पानी के बिना नहीं होता इसी तरह पर अगर ख़ुदा के फ़ैज़ का पानी न पहुंचे तो हम बढ़ नहीं सकते। वृक्ष पानी को चूसता है। इसकी जड़ों में छिद्र और सुराख़ होते हैं। प्रकृति में यह बात है कि वृक्ष की शाख़ें पानी को खींचती हैं। इन में खींचने की शक्ति है। इसी तरह पर उबूदीयत में एक खींचने की शक्ति होती है जो ख़ुदा के फ़ैज़ान को खींचती है और चूसती है। अत: الرَّحْمٰنِ के मुक़ाबला اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ है अर्थात यदि उस की रहमानियत हमारे साथ न होती। यदि यह शक्तियां और ताक़तें तू ने प्रदान न की होतीं तो हम उस फ़ैज़ से कैसे लाभान्वित हो सकते।

हिदायत अल्लाह तआला की रहमानियत से मिलती है।

الرَّحْمٰنِ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ के मुक़ाबला में है, क्योंकि हिदायत पाना किसी का हक़ तो नहीं है बल्कि केवल इलाही रहमानियत से यह फ़ैज़ प्राप्त हो सकता है और صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ الرَّحِيْمِ के मुक़ाबला में है , क्योंकि उसका विर्द करने वाला रहीमियत के स्रोत से फ़ैज़ प्राप्त करता है और इसके यह अर्थ हैं कि हे विशेष रहम से दुआओं के स्वीकार करने वाले इन रसूलों और सिद्दीक़ों और शहीदों और सालिहों की राह हमको दिखा जिन्होंने दुआ और चेष्टाओं में लीन हो कर तुझसे विभिन्न प्रकार के मआरिफ़ और हक़ायक़ और कश्फ़ों और इल्हामों का इनाम पाया और स्थायी दुआ और विनय और नेक कर्मों से पूर्ण मार्फत (अनुभूति) को पहुंचे। रहीमियत के अर्थ में हानि को दूर करना लगा हुआ है। हदीस में आया है कि अगर फ़ज़्ल न होता तो मुक्ति न होती। ऐसा ही हदीस से मालूम होता है कि हज़रत आयशा रज़ी अल्लाह तआला अन्हा ने आप (स.अ.व) से सवाल किया कि हे हज़रत! क्या आप का भी यही हाल है। आप ने सिर पर हाथ रखा और फ़रमाया। हाँ। अज्ञान और मूर्ख ईसाइयों ने अपनी कम अक़्ली और अज्ञानता के कारण से आरोप किए हैं लेकिन वे नहीं समझते कि यह आप की कमाल उबूदीयत का प्रकटन था जो ख़ुदा तआला की रबूबियत को खींच रहा था। हमने स्वंय अनुभव करके देखा है और कई बार आज़माया है, बल्कि हमेशा देखते हैं कि जब विनय और विनम्रता की अवस्था चरम को पहुंची है और हमारी रूह इस अबूदियत और विनय में बह निकलती है और बहुत अधिक देने वाले अल्लाह तआला के दरगाह में पहुंच जाती है तो एक रोशनी और नूर ऊपर से उतरता है और ऐसा मालूम होता है जैसे एक नाली के माध्यम से पवित्र पानी दूसरी नाली में पहुंचता है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनवार तथा बरकतों

अत: आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हालत जितनी कुछ स्थानों पर विनय तथा विनम्रता में कमाल पर पहुंची हुई नज़र आती है। वहां मालूम होता है कि उतना ही आप रूह अल-क़ुदस की सहायता और रोशनी से सहायता प्राप्त और प्रकाशित हैं। जैसा कि हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने व्यावहारिक और कर्म की हालत से दिखाया है यहां तक कि आपके नूरों एवं बरकतों का दायरा इतना व्यापक है कि आरम्भ से अन्त तक उसी का आचरण और प्रतिरूप नज़र आता है। अत: इस ज़माना में भी जो कुछ ख़ुदा तआला का फ़ैज़ और फ़ज़्ल नाज़िल हो रहा है वे आप ही के आज्ञापालन और आप ही के अनुकरण से मिलता है। मैं सच कहता हूँ और अपने अनुभव से कहता हूँ कि कोई आदमी वास्तविक नेकी करने वाला और ख़ुदा तआला की प्रसन्नता को पाने वाला नहीं ठहर सकता और उन इनामों तथा बरकतों और मआरिफ़ और हक़ायक़ और कश्फ़ों से लाभान्वित नहीं हो सकता जो उच्च स्तर के नफ़्स की पवित्रता पर मिलते हैं। जब तक कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुकरण में खोया न जाए और इस का सबूत ख़ुद ख़ुदा तआला के कलाम से मिलता है कि

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ

(आले इम्रान: 32) और ख़ुदा तआला के इस दावा की व्यावहारिक और ज़िन्दा दलील मैं हूँ। उन निशानों के साथ जो ख़ुदा तआला के महबूबों और वलियों के क़ुरआन शरीफ़ में निर्धारित हैं मुझे पहचानो। अत: नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आचरण का कमाल यहां तक है कि अगर कोई बुढ़िया भी आप का हाथ पकड़ती थी तो आप खड़े हो जाते और इसकी बातों को बहुत ध्यान से सुनते और जब तक वह ख़ुद आप को न छोड़ती। आप न छोड़ते थे।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 187 से 189 प्रकाशन 2008 कादियान)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

..... पृष्ठ 1 का शेष

आज अबू बकर रजि से मेरा झगड़ा हो गया था जिसका मुझे अफ़सोस है। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह बात सुनकर ग़ुस्सा आ गया और आपने फ़रमाया तुम लोग क्यों उसे कष्ट देने से रुकते नहीं जब तुम लोग इस्लाम का मुक़ाबला कर रहे थे तो वह मुझ पर ईमान लाया था और उसने मेरा साथ दिया था। हज़रत उमर रज़ि अभी क्षमा ही कर रहे थे कि हज़रत अबू बकर रज़ि को भी ख़्याल आया कि शायद हज़रत उमर रज़ि मेरे बारे में कोई ऐसी बात न कर दें जिससे रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझसे नाराज़ हों इस लिए वह भी दौड़ कर आए कि मैं चल कर हक़ीक़त बताऊं कि मेरा नहीं बल्कि उमर रज़ि का क़सूर था। परन्तु जूंही आप दरवाज़ा पर दाख़िल हुए आपने देखा कि हज़रत उमर रज़ि क्षमा चाह रहे हैं और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन पर नाराज़ हो रहे हैं हज़रत अबूबकर रज़ी अल्लाह अन्हो उसी समय घुटने पर बैठ गए और निवेदन किया हे अल्लाह के रसूल! मेरे माता पिता आप पर क़ुर्बान दोष मेरा ही था। उमर का क़सूर नहीं था। इस तरह आपने हज़रत उमर रज़ि पर से रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नाराज़गी को दूर करने की कोशिश की। यह थी उन की नेकी में एक दूसरे से आगे बढ़ने की भावना कि दोष हज़रत उमर रज़ि का है परन्तु माफ़ी हज़रत अबू बकर रज़ि मांग रहे हैं ताकि हज़रत उमर रज़ि पर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नाराज़ न हों।

वास्तव में इस्लाम और दूसरे धर्मों में जहां और बहुत से अन्तर हैं जो उस की फ़ज़ीलत को स्पष्ट रूप से प्रमाणित करते हैं वहां एक बहुत बड़ा अन्तर यह भी है कि दूसरे धर्म केवल नेकी की तरफ़ बुलाते हैं परन्तु इस्लाम आगे बढ़ने की तरफ़ बुलाता है।"(तफ़सीर कबीर, भाग 2 पृष्ठ 254 से 255 प्रकाशन कादियान 2010 ई)

पृष्ठ 2 का शेष

च्यन बहुत सावधानी से किया और लहजे को भी नर्म रखा। उनके व्यक्तित्व की तरह उनके शब्दों और वर्णन शैली पर भी पर शान्ति और नर्मी थी। उनकी तक़रीर से पहले मुझे उनकी ज़ात से जिस पवित्रता और नूर का अनुभव हो रहा था, उनकी बात ने इस विचार का समर्थन और तसदीक़ की है। महोदया और अधिक कहती हैं कि आप लोगों ने बहुत उच्च तथा उत्तम तरीक़ा पर इस दावत का प्रबन्ध किया जिसका चरम इमाम जमाअत अहमदिया का ख़ुद सम्मिलित होना था। मैं निरन्तर यह सोचती रही कि क्या सिर्फ साढ़े चार-सौ लोगों से मिलने के लिए और वह भी समाज के समस्त वर्गों से सम्बन्ध रखने वाले लोगों से मुलाक़ात के लिए पोप को बुलाया जाता तो वह इतना लम्बा सफ़र कर के मिलने आते? मेरे दिल तथा दिमाग़ पर इस तरह की तुलना ने इमाम जमाअत अहमदिया का प्रभाव और अधिक गहरा कर दिया है। मुझे लगता है कि यदि धार्मिक लीडरशिप हो तो ऐसी होनी चाहिए जो आम आदमी की समस्याओं तक ज़ाती तौर पर पहुंच सके।

मिस अवश्कंस (Miss Oschkinis) साहिबा अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहती हैं इमाम जमाअत अहमदिया बात करते हैं तो बात को घुमा फिराकर नहीं करते बल्कि साफ़, सीधी और सच्ची बात करते हैं और इसमें प्रभाव पैदा करने के लिए लहजे को सख़्त नहीं होने देते। उनकी शान्ति वाली बातें विश्वास योग्य लगती हैं क्योंकि उनमें इन्सानियत के लिए सच्ची और निस्वार्थ हमदर्दी पाई जाती है और आपके काम करने वाले भी पैसे लिए बिना निस्वार्थ अंदाज़ में इतने बड़े प्रोग्राम करते हैं। मुझे लगता है कि समाज में स्थायी अमन और इन्सानी क़दरों की स्थापना के लिए ऐसी मेहनती जमाअत और ऐसे भरोसा वाले और निस्वार्थ हमदर्दी करने वाले लीडर की ज़रूरत है।

डाक्टर कोहलर (Dr. Koehler) साहिबा ने अपने विचार वर्णन करते हुए कहा। मुझे इस बात ने बहुत प्रभावित किया है कि आपके इमाम कितने खुले दल के इन्सान हैं और यही ख़ूबी है जिसकी वह नसीहत कर रहे थे कि इन्सानी क़दरों की स्थापना के लिए अपने दिलों को खोलना पड़ेगा और शंकाएं दूर करनी होंगी और आपकी जमाअत के लोग बहुत ही नेक और उच्च आचरण के मालिक हैं। मैं भी अपने हस्पताल में कोशिश करती हूँ कि विश्व के धर्मों में भाईचारा बढ़े और लोगों को रूहानियत से शान्ति प्राप्त हो। यही शान्ति तथा अमन मुझे आज के आयोजन में देखने को मिली है। मैं बहुत ख़ुश हूँ कि मुझे यहां शामिल होने का अवसर मिला।

हेरालड बीवनज़ल (Harald Boensel) साहिब कहते हैं। हुज़ूर ने अपनी तक़रीर बहुत ही ख़ूबसूरत रंग में प्रस्तुत की और मैंने इस तक़रीर से बहुत कुछ सीखा है। हम सब में जो बातें साझी हैं उनको सामने लाया गया है और स्थायी अमन की स्थापना के लिए इन्सानियत की साझी कदरों के द्वारा एक दूसरे के क़रीब आने का रास्ता खोला गया है। मैं समझता हूँ कि इस्लाम के बारे में हमारी जो आम तौर पर धारणा है वह ठीक नहीं है और हमें इस्लाम को इमाम जमाअत अहमदिया के वर्णन किए गए बिन्दुओं की रोशनी में देखने की ज़रूरत है।

सोंजा श्मिट (sonja Schmidt) साहिबा कहती हैं। मैं हुज़ूर की दिल की गहराई से शुक्रगुज़ार हूँ। आपने वे बातें फ़रमाईं जो मेरी रूह में मौजूद थीं। आपने इन रुहानी वास्तविकताओं को उजागर भी किया और उनका आज के नए ज़माना में अनुकरण योग्य होना भी साबित करके दिखाया है। मैं यद्यपि एक ईसाई हूँ परन्तु मैं ख़ुद को मुसलमानों की तरह ही इस तक़रीर का सम्बोधित समझती हूँ।

एक औरत मिस पियो (Miss Peiv) साहिबा अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहती हैं। मुझे आपके ख़लीफ़ा एक हैरान करने वाले वजूद लगे हैं। मैंने इरादा किया था कि मैं कुछ समय के लिए यहां रहूंगी और जल्दी वापस चली जाऊँगी क्योंकि मेरे चार बच्चे हैं और मेरी बहन आज उनका विचार रख रही है। परन्तु अब मैंने उसे message कर दिया है कि मैं कुछ अधिक देर यहां रहूंगी क्योंकि मैं हुज़ूर की सारी तक़रीर सुनना चाहती हूँ। उनकी मौजूदगी में उठ कर जाना मुमकिन नहीं है।

एक उस्ताद बैन इल्म (Ben Elm) साहिब कहते हैं मैं हुज़ूर के ख़िताब से बहुत ही प्रभावित हुआ हूँ। विशेष रूप से इस कारण से कि आपने कोई पहले से तैय्यार की हुई तक़रीर नहीं पढ़ कर सुनाई बल्कि दूसरे मेहमानों की तक़रीर को भी अपनी तक़रीर में शामिल किया। अमन का जो पैग़ाम और धर्मों की जो ज़िम्मेदारियाँ आपके ख़लीफ़ा ने अपनी तक़रीर में वर्णन की हैं, वही समाज में वास्तविक अमन का कारण हैं।

जर्मनी के मशहूर टीवी और रेडियो स्टेशन की ऐडीटर मिस कलोस्टरमन (Miss Klostermann) अपने विचारों को वर्णन करते हुए कहती हैं आपके ख़लीफ़ा के शब्द इल्म तथा हिक्मत से भरे हुए थे।

एक राजनीतिक प्रतिनिधि Elvira Mihm) साहिबा कहती हैं मुझे यह सारा प्रोग्राम बहुत ही पसंद आया है। आपके ख़लीफ़ा एक प्रभावित करने वाली शख़्सियत के मालिक हैं और उनको देखकर एक विशेष तरह के सम्मान की भावनाएँ पैदा होती हैं। आपका ख़िताब भी उनकी ज़ात से मिलता था।

थोमीन (Thomain) साहिबा कहती हैं मैंने ख़लीफ़ा के वजूद को एक रुहानी तासीर रखने वाला वजूद पाया और सारे प्रोग्राम में मुझ पर यही विचार ग़ालिब रहा। मुझे हुज़ूर का वजूद एक बहुत ही आरामदेह एहसास दिलाता रहा और उनकी तक़रीर भी मेरे लिए आर्थिक समीक्षा और नए युग में इन्सानी क़दरों की महत्त्वपूर्ण उजागर करने वाली थी। खासतौर पर यह बात कि वह दूसरों की तक़रीरों को अपनी तक़रीर में शामिल करते रहे और उनके वर्णन किए गए बिन्दुओं के महत्त्व को भी अपनी तक़रीर का हिस्सा बनाया।

दानी ला ओटिर वाइन (Daniela Otterwein) साहिबा अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहती हैं मुझे हुज़ूर बहुत ही अच्छे लगे और मैं शब्दों में वर्णन नहीं कर सकती कि आप कितने महान इन्सान हैं। एक ऐसी शख़्सियत जिससे नूर ही नूर प्रकट हो रहा है। मुझे इस से पहले इस्लाम का कोई इल्म नहीं था। मेरे लिए आप ही की ज़ात इस्लाम का पहला परिचय है, जो मुझे बहुत अच्छा लगा।

एक मेहमान जो कि पेशे के दृष्टि से उस्ताद हैं वह भी इस आयोजन में शामिल हुए। वह कहते हैं इस्लाम को बिल्कुल इस तरह के लीडर की ज़रूरत है ताकि समस्त धर्मों में लड़ाईयां ख़त्म की जाएं। आपके ख़लीफ़ा केवल लीडर नहीं हैं बल्कि एक बहुत पढ़े लिखे व्यक्ति मालूम होते हैं। मैंने इंटरनैट से उनके बारे में मालूमात प्राप्त की हैं और आप एक बहुत अच्छे वक्ता हैं।

एक मेहमान ओलीवर वाइसन बीरगर (Oliver Weissen berger) साहिब कहते हैं मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ और हमारी मेज़बानी बेहतरीन तरीक़ा पर की गई। इमाम जमाअत अहमदिया का व्यक्तित्व बहुत प्रभावित करने वाला था। मुझे ख़ुशी है कि मैं आज यहां पर मौजूद था। इमाम जमाअत अहमदिया ने प्रशंसा योग्य अमन का पैग़ाम दिया है जिसकी इस समय दुनिया को बहुत ज़रूरत है। इस से पहले मेरा यह विचार था कि इस्लाम दूसरे धर्मों से बराबरी का सुलूक नहीं करता परन्तु ख़लीफ़ा ने इस बात को पूर्ण तौर पर रद्द फ़रमाया है और तर्क के साथ अपना विचार प्रस्तुत किया है।

21 अक्तूबर 2019 ई (दिनांक सोमवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह 7 बजे बैयतुस्सुबूह तशरीफ़ लाकर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक, ख़ुतूत और रिपोर्टें देखीं और हिदायतों से नवाज़ा। हुज़ूर अनवर की दफ़्तर के मामलों को पूरा करने में व्यस्तता रही।

आज प्रोग्राम के अनुसार बैयतुस्सुबूह फ़्रैंकफ़र्ट से बर्लिन के लिए रवानगी थी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ साढ़े ग्यारह बजे अपनी रिहायश गाह से बाहर तशरीफ़ लाए और कुछ देर के लिए मस्जिद के हाल में तशरीफ़ ले गए जहां तालीमुल-इस्लाम कॉलेज रब्वाह ओलड स्टूडैंटस के प्रबन्धकों और तारीख़ कमेटी तथा अख़बार अहमदिया जर्मनी के प्रबन्धकों ने अलग अलग ग्रुप की सूरत में तस्वीरें खिंचवाने की सौभाग्य पाया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ को विदा कहने के लिए जमाअत के मर्दों, औरतों की एक बड़ी संख्या बैयतुस्सुबूह के बाहरी सेहन में जमा थी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ स्नेह करते हुए लोगों के मध्य तशरीफ़ ले आए और लगभग 10 मिनट लोगों के मध्य रौनक अफ़रोज़ रहे। इस दौरान बच्चियां ग्रुप की सूरत में अल्विदाई दुआइया नज़्में पढ़ती रहीं और औरतें दर्शन का लाभ पाती रहीं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने स्नेह करते हुए विभिन्न लोगों से गुफ़्तगु फ़रमाई।

बैयतुस्बूह के किचन में काम करने वाले एक नौजवान ख़ालिद के हाथ की एक उंगली पर पटी बंधी हुई थी और इसके हाथ में दर्द होता था। हुज़ूर अनवर ने स्नेह करते हुए उसके हाथ को पकड़ कर हाथ के विभिन्न हिस्सों में अपनी उंगली रख कर पूछा कि यहां दर्द होता है या यहां दर्द होती है और फिर महोदय के लिए होमियो नुस्ख़ा भी तजवीज़ फ़रमाया।

इसके बाद 11 बजकर 45 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सामूहिक दुआ करवाई और अपना हाथ ऊंचा करके सबको अस्सलाम अलैकुम कहा और क़ाफ़िला बर्लिन के लिए रवाना हुआ।

यहां बैयतुस्सुबूह(फ़रंकफ़र्ट)से बर्लिन का दूरी 550 किलोमीटर है। प्रोग्राम के अनुसार 325 किलोमीटर का दूरी तय करने के बाद 2 बजकर 30 मिनट पर क्षेत्र

Osterfeld में स्थित होटल Amadeus में पधारे। नमाज़ ज़ुहर तथा असर की अदायगी और दोपहर के खाने का प्रबन्ध यहां किया गया था।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 3 बजे होटल के एक हाल में तशरीफ़ लाकर नमाज़ ज़ुहर तथा अस्र जमा करके पढ़ाईं। नमाज़ों की अदायगी और दोपहर के खाने के बाद 4 बजकर 15 मिनट पर यहां सियागे बर्लिन के लिए रवानगी हुई यहां से बर्लिन की दूरी 225 किलोमीटर था। लगभग अढ़ाई घंटे के सफ़र के बाद 6 बजकर 45 मिनट पर "मस्जिद ख़दीजा' बर्लिन में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ पधारे। जहां जमाअत के लोगों ने बड़ी संख्या में अपने प्यारे आक़ा का स्वागत किया। मर्दो, औरतों की एक बड़ी संख्या दोपहर के बाद से ही मस्जिद पहुंचना शुरू हो गई थी और हुज़ूर अनवर के आने पर मस्जिद और मिशन हाऊस का बैरूनी सेहन लोगों से भरा हुआ था। अहलन व सहलन व मरहबा की आवाज़ें हर तरफ़ से आ रही थीं। बच्चियां ग्रुपस की शक्ल में स्वागत गीत और दुआइया नज़्में प्रस्तुत कर रही थीं। जैसे हुज़ूर अनवर गाड़ी से बाहर तशरीफ़ लाए तो सदर जमाअत बर्लिन हाफ़िज़ उसामा अहमद साहिब और मुबल्लिग़ सिलसिला बर्लिन सईद अहमद आरिफ़ साहिब ने हुज़ूर अनवर को स्वागत कहा।

हुज़ूर अनवर ने अपना हाथ ऊंचा करके सब को अस्सलामो अलैकुम कहा और अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

मस्जिद ख़दीजा बर्लिन शहर के क्षेत्र Pankow में स्थित है और बर्लिन शहर का यह क्षेत्र भूतपूर्व पूर्वी जर्मनी में शामिल था। मस्जिद ख़दीजा की बुनियाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने दौरा जर्मनी के दौरान 2 जनवरी 2007 ई को रखा था और मस्जिद के सम्पूर्ण होने के बाद 17 अक्तूबर दिनांक जुमअतुल मुबारक 2008 ई को इस का उद्घाटन फ़रमाया था।

इस मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिए 2 हाल हैं और हर हाल का क्षेत्रफल 168 वर्ग मीटर है। मस्जिद के मीनार की ऊंचाई 13 मीटर है और गुंबद की गोलाई 9 मीटर है।

मस्जिद के बनाने के साथ इसी सेहन में एक रिहायशी हिस्सा और दफ़्तर बनाए गए हैं। रिहायशी हिस्सा में एक 4 कमरों की रिहायश गाह, इसके अतिरिक्त 2 कमरों की रिहायश गाह और एक कमरा मेहमान ख़ाना शामिल है,इसके अतिरिक्त 4 दफ़्तर,एक लाइब्रेरी और एक कान्फ़्रेंस रुम शामिल है। यहां बड़े जमाअत के किचन की सुविधा भी मौजूद है और 22 गाड़ीयों की पार्किंग का स्थान है।

यह तारीख़ी मस्जिद 1.7 मिलियन यूरो में पूर्ण हुई थी और इसके खर्चे लजना इमाउल्लाह ने बर्दाश्त किए थे और इस मस्जिद का डिज़ाइन आदरणीया मबशरा इलयास साहिबा ने तैय्यार किया था। यह मस्जिद केवल औरतों की माली क़ुर्बानियों से बनी थी। 1.3 मिलियन यूरो का ख़र्च लजना इमाउल्लाह जर्मनी ने बर्दाश्त किया था जबकि बाक़ी 4 लाख यूरो में से बड़ा हिस्सा लजना इमा उल्लाह यूके ने अदा किया था। यह 2 मंज़िला मस्जिद दूर से नज़र आती है और ध्यान अपनी तरफ़ खींचती है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 8 बजे मस्जिद ख़दीजा तशरीफ़ लाकर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाऐं। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

शहर बर्लिन 1183 ई से दरयाए Spree के किनारे आबाद है 892 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल पर आधारित इस शहर की आबादी 3.4 लेन है। 1871 ई में इस शहर को पहली बार जर्मनी की राजधानी का सम्मान प्राप्त हुआ। दूसरे विश्व युद्ध में इस शहर की आबादी 4.3मिलियन थी जिसमें से 2.8 मिलियन लोग ज़िन्दा बचे और 6 लाख मकान तबाह हुए। दीवार बर्लिन के बनाने से यह शहर 2 हिस्सों में बंट गया और एक हिस्सा रूस के प्रभाव के अधीन आ गया जो पूर्वी जर्मनी कहलाता था। 10 नवम्बर 1989 ई को दीवार बर्लिन गिराई गई और यूं बर्लिन के दोनों हिस्से इकट्ठे हो गए।

यहां "मस्जिद ख़दीजा" इस दृष्टि से तारीख़ी तथा महत्त्वपूर्ण है कि यह मस्जिद शहर के इस हिस्सा में बनाई गई है जो रूस के प्रभाव के अधीन था और इस तारीख़ी मस्जिद के बनाने की चर्चा दुनिया-भर की प्रिंट और इलैक्ट्रॉनिक मीडिया ने किया था।

22 अक्तूबर 2019 ई (दिनांक मंगलवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह6 बजकर 45 मिनट पर मस्जिद ख़दीजा बर्लिन में तशरीफ़ लाकर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक देखी और हिदायतों से नवाज़ा। हुज़ूर अनवर की विभिन्न दफ़्तरी मामलों के पूरा करने में व्यस्तता रही।

2 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने तशरीफ़ लाकर नमाज़ ज़हर तथा अस्र जमा करके पढ़ाऐं। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह तशरीफ़ ले गए

मैंबरान पार्लीमैंट और धार्मिक तथा राजनीतिक व्यक्तियों की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात।

जर्मन नैशनल पार्लीमैंट के क़रीब, अमरीकी तथा बर्तानवी सिफ़ारत ख़ानों और जर्मनी की पहचान ब्रांडन बर्ग दरवाज़े (Brandenburg Gate)से कुछ क़दम दूर स्थित होटल Adlon Kempinski में एक प्रमुख आयोजन का प्रबन्ध किया गया था। जिसमें बड़ी संख्या में पार्लीमैंट के मेम्बर और अन्य उच्च सरकारी हुक्काम और विभिन्न राजनीतिक और धार्मिक व्यक्ति शामिल हो रहे थे। प्रोग्राम के अनुसार साढ़े पाँच बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद ख़दीजा से रवाना हुए और छ: बजे इस होटल में तशरीफ़ लाए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ होटल के मीटिंग रुम में तशरीफ़ ले आए जहां पहले से तय प्रोग्राम के अनुसार Mr Niels Annen जो कि मिनिस्टर आफ़ स्टेट और डिप्टी फ़ौरन मिनिस्टर हैं ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ मुलाक़ात की।

महोदय के साथ दो मैंबरान पार्लीमैंट भी मौजूद थे। उनमें से एक Mr Frank Heinrich जोकि ह्यूमन राईट्स के spokesperson हैं और दूसरे Mr Omid Nourpour जोकि फ़ौरन अफेयर्ज़ के spokesperson हैं

मिनिस्टर आफ़ स्टेट Niels Annen ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में निवेदन किया कि यहां आना और हुज़ूर अनवर का ख़िताब सुनना मेरे लिए सम्मान का कारण है। मैं हिमबर्ग में एक ज़िला का प्रतिनिधित्व करता हूँ जहां जमाअत अहमदिया बहुत सक्रिय है। अहमदियों के साथ मेरा बहुत अच्छा सम्बन्ध रहा है और मैं अहमदियों से बहुत प्रभावित हूँ। अब हुज़ूर से मुलाक़ात करके बहुत ख़ुश हूँ और गर्व अनुभव करता हूँ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया आप तो पहले से ही अहमदिया कम्यूनिटी को जानते हैं। इस पर महोदय ने निवेदन किया कि मैं बहुत अच्छी तरह जानता हूँ।

महोदय ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के दौरा के हवाला से पूछा जिस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मैं इस साल पहले जलसा सालाना जर्मनी के लिए भी आया था। लेकिन अब जर्मनी के इस दौरा का उद्देश्य कुछ मस्जिदों का उद्घाटन करना और आज के इस आयोजन में शामिल होना था।

बर्लिन के आयोजन के हवाला से बात हुई जिस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया यहां जर्मनी में आजकल Islamic Civilization and Culture and its Integration के विषय का बहुत चर्चा है। जर्मनी जमाअत ने इस इच्छा का इज़्हार किया था कि मैं यहां आऊँ और इस विषय पर सम्बोधन करूँ। तो मैं इसी लिए यहां आया हूँ कि मैं बताऊं कि इस्लाम से भयभीत होने का कोई कारण नहीं है। जब पश्चिमी सभ्यता इतनी मज़बूत है तो फिर डरने की क्या बात है कि इस सभ्यता को आसानी से ख़त्म कर दिया जाएगा? आज इसी विषय पर कुछ वर्णन करूँगा।

महोदय के पूछने पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अभी यहां जर्मनी में कुछ दिन और निवास है। अब बर्लिन से कल हेमबर्ग की तरफ़ जा रहा हूँ। आपकी constituency मैं जा रहा हूँ।

महोदय मिनस्टर ने अपने साथी Omid Nouripour जिनका सम्बन्ध ग्रीन पार्टी से है का परिचय करवाते हुए बताया कि यह भी मुसलमान हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया आज के आयोजन के बाद मुसलमान मैंबर पार्लीमैंट को इस्लाम का प्रतिरक्षा करने के लिए बेहतरीन तर्क उपलब्ध हो जाएंगे।

महोदय Omid Nourpour ने निवेदन किया कि फ्रांकफ़ुर्ट में जिस तरह अहमदिया कम्यूनिटी सेवा कर रही है वह ग़ैरमामूली है और जमाअत अहमदिया की तरफ़ से integration का उच्च उदाहरण है। जमाअत बेहतरीन रंग में integrate कर रही है। जमाअत की तरफ़ से बहुत सहयोग मिलता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने डिप्टी मिनिस्टर से पूछा कि फ़ौरन मिनिस्टर की हैसियत से आपके क्या चैलंज हैं ? क्या Brexit के मामला में भी आप involved हैं? यह मामला तो बड़ी मुश्किल अवस्था में है।

इस पर महोदय ने निवेदन किया कि अवश्य एक तो Brexit ही है। आज भी इस बारे में नई बातचीत हुई है और कहा जा रहा है कि जल्द ही बर्तानिया में आम चुनाव आयोजित होंगे। हम तो यूरोपियन यूनीयन को एक साथ रखना चाहते हैं और इसके लिए जर्मनी की विशेष ज़िम्मेदारी है।

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 1 October 2020 Issue No.40

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

तीसरे मेहमान CDU पार्टी के मैंबर आफ़ पार्लीमैंट Frank Heinrich ने निवेदन किया कि मैं जमाअत अहमदिया का शुक्रिया अदा करना चाहता हूं कि वह जर्मनी में ज़बरदस्त काम कर रही है। आपकी जमाअत के लोग न केवल हमारे अंदर जज़्ब हो गए हैं बल्कि समाज की भलाई में भी अच्छा-ख़ासा हिस्सा डाल रहे हैं।

इसके बाद पाकिस्तान में अहमदियों पर होने वाले अत्याचारों का वर्णन हुआ तो हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: पाकिस्तान में अहमदियों के हालात एक लंबे समय से एक जैसे ही हैं। वहां का क़ानून अहमदियों को न केवल तब्लीग़ करने से मना करता है बल्कि अपने धर्म पर अनुकरण करने से भी रोकता है। अगर हम "अस्सलामो अलैकुम" भी कहें या बच्चे का इस्लामी नाम रखें तो क़ानून की दृष्टि से सज़ा के अधिकारी बनते हैं। क़ानून इसकी आज्ञा नहीं देता। जब तक यह क़ानून बाक़ी है हालात तबदील होने की कोई उम्मीद नहीं है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया जो लोग हमसे हमदर्दी रखते हैं हम उन्हें यही कहते हैं वे केवल पाकिस्तानी हुकूमत को एक साथ चुनाव करवाने पर ज़ोर दें। Joint Election हो और बिना किसी धर्म के अन्तर के इलैक्शन हो। प्रत्येक को अपने धर्म से ऊंचा होकर वोट देने का हक़ प्राप्त होना चाहिए। हमें यह कहा जाता है पहले अपने आपको ग़ैर मुस्लिम समझो और फिर ग़ैर मुस्लिम के लिए जो सीटें हैं उन पर इलैक्शन लड़ो। हम कहते हैं कि हम मुसलमान हैं और हमें देश के एक शहरी की हैसियत से वोट देने का हक़ मिलना चाहिए।

Blasphemy Laws के हवाला से बात हुई तो हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया मैं नहीं समझता कि यह लोग मौलवियों के भय से "तौहीन रिसालत के क़वानीन" को ख़त्म करेंगे लेकिन केवल एक ही अवस्था है और वह मिले हुए चुनाव हैं। मिले हुए चुनाव हों तो हम पार्लीमैंट में जाएं और वहां आवाज़ उठाएं। इस से हमें कई बुनियादी अधिकार वापस मिलने शुरू हो जाऐंगे। मौजूदा हुकूमत भी इसी डगर पर चल रही है जिस पर पहली हुकूमतें चलती रही हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: जो भी हो, हम ख़ुद को कभी भी ग़ैर मुस्लिम नहीं कहेंगे क्योंकि यह हमारी अन्तरात्मा और ईमान के ख़िलाफ़ है।

मैंबर पार्लीमैंट Frank Heinrich ने निवेदन किया कि मैं भी जर्मन ह्यूमन राईट्स कमेटी का हिस्सा हूँ और मैं यह कहना चाहता हूं कि हमें आप लोगों के साथ होने वाली ज़्यादतियों से तकलीफ़ होती है। मैं जानना चाहता हूं कि आपका यूरोप में अन्य मुसलमान फ़िर्क़ों के साथ कैसा सम्बन्ध है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: पश्चिमी दुनिया में भी जमाअत अहमदिया के ख़िलाफ़ प्रापेगंडा किया जाता है। हमारे मुख़ालिफ़ कहते हैं कि हम एक नए नबी को मानते हैं और हम रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमन्नबिय्यीन नहीं मानते और आप की नबुव्वत की ख़ातमियत को रद्द करते हैं। हालाँकि यह बात ठीक नहीं है। लेकिन इसके बावजूद मौलवियों की तरफ़ से हमारे ख़िलाफ़ यही प्रापेगंडा किया जा रहा है कि हम ख़त्मे नबुव्वत के ख़िलाफ़ हैं। हमारे विरोधी आम मुसलमानों के दिमाग़ों को हमारे ख़िलाफ़ गन्दा कर रहे हैं। परन्तु इसके बावजूद मुसलमान हैं यहां तक कि कई स्कूलों और अहले इलम लोग जानते हैं कि अहमदी ठीक हैं। वे हमारे साथ हैं और हमारे साथ होने का इज़हार भी करते हैं और अहमदियों पर होने वाले अत्याचार की निन्दा करते हैं। लेकिन आम लोग हमारा विरोध करते हैं और उन पश्चिमी देशों में हमारा सीधा विरोध तो नहीं करते बल्कि अपने तौर पर करते हैं , अपने दिलों में रखते हैं। बहरहाल इस प्रापेगंडा के कारण से उन देशों में भी हम कु-धारणाओं का शिकार हैं।

Omid Nouripour के पूछने पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: पाकिस्तान में पहले वक़्तों में तो कई ख़ानदान ऐसे होते थे जिनके साथ अहमदी बड़े दोस्ताना माहौल में रहते थे। लेकिन विरोधियों के प्रापेगंडा के कारण से ऐसे लोग भी दूर हो रहे हैं।

महोदय के पूछने पर कि इमरान ख़ान के प्रधानमन्त्री बनने के बाद कोई तबदीली आई है, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इस सवाल का जवाब आपको इस बात से मिल जाएगा कि जब इमरान ख़ान साहब इकनॉमिक एडवाइज़री कमेटी बना रहे थे तो इस कमेटी में उन्होंने एक मैम्बर अहमदी को रखा था। इस पर मौलवियों ने बहुत शोर मचाया जिसके कारण से इमरान ख़ान साहिब को इस अहमदी को इस कमेटी से निकालना पड़ा। मौजूदा हुकूमत भी मुल्लाऊं के आगे विवश है। इमरान ख़ान के आने के बाद भी अहमदियों के हालात में कोई तबदीली नहीं है बल्कि अहमदियों के ख़िलाफ़ पहले से अधिक केस हो रहे हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: पाकिस्तान में कई सियास्तदान हैं जो कहते हैं मौलवियों के दबाओ के कारण से उनके हाथ बंधे हुए हैं क्योंकि मौलवियों के पास लोगों को सड़कों पर लेकर आने की ताकत है।

मैंबर आफ़ पार्लीमैंट Frank Heinrich ने निवेदन किया कि किया Brexit के बाद हुज़ूर यूके में रहने से सन्तुष्ट होंगे? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जहां धार्मिक आज़ादी होगी और समस्त लोगों को उनके शहरी अधिकार मिल रहे होंगे वहां मैं सन्तुष्ट ही होंगा।

एक सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: पाकिस्तान में चालीस साल से अधिक समय से हम अत्याचार का सामना कर रहे हैं। पाकिस्तानी अहमदी जो कि पाकिस्तान में रह रहे हैं वे भी ख़ामोशी से यह कष्ट सहन कर रहे हैं। जो बर्दाश्त नहीं कर पाते वे वहां से हिजरत कर जाते हैं। बहरहाल मेरा ध्यान तो सारी दुनिया में सारी जमाअत पर है। नेपाल में, मलेशिया में, थाईलैंड में और श्रीलंका में बहुत से अहमदी हैं जो मुश्किलें बर्दाश्त न कर सकने की कारण से पाकिस्तान से वहां पहुंचे हैं। इन देशों में UNHCR उनके केस सुनती है और फिर यह लोग यूरोप और दूसरे देशों में चले जाते हैं। हमारा विरोध केवल पाकिस्तान में ही नहीं है। उदाहरण के तौर पर मलेशिया की कई स्टेटस में भी हमें ग़ैर मुस्लिम समझा जाता है।

मुसलमान मेम्बर पार्लीमैंट Omid Nouripour ने निवेदन किया कि आप लोगों को मलेशिया में भी समस्याओं का सामना है, यह सुनकर बड़ा दुख हुआ है क्योंकि मलेशिया तो दावा करता है कि वह मुसलमान देशों में सबसे अधिक धैर्य और बर्दाश्त करने वाला देश है।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: प्राय मौलवियों के अंदर बर्दाश्त का माद्दा शून्य है। समस्त फ़िर्क़े एक दूसरे की बुराइयां वर्णन करते हैं। बेशक उन्होंने अन्य फ़िर्क़ों को हमारी तरह ग़ैर मुस्लिम क़रार नहीं दिया लेकिन आपस में उनकी दुश्मनियां ज़रूर हैं। लेकिन हमारे ख़िलाफ़1974 ई में क़ानून बना था कि you are not Muslim for the purpose of law and constitution जब यह क़ानून बना था तो उस समय जवाईंट इलैक्शन ही होता था। बाद में यह ख़त्म किया गया। फिर 1984 ई में ज़ियाउल हक़ ने जो क़ानून बनाया इसमें हम पर सख़्त पाबंदियां लगा दी गईं कि हम मस्जिद को मस्जिद नहीं कह सकते, बच्चे का नाम अहमद, मुहम्मद या इस्लामी नाम नहीं रख सकते। अस्सलामो अलैकुम नहीं कह सकते। हमारे ख़िलाफ़ सख़्त क़नून बनाए गए।

बातचीत के दौरान यह ज़िक्र हुआ कि जर्मन हुकूमत सीरिया की समस्याओं को राजनीतिक तौर पर हल करने में बहुत सक्रिय है। इस पर हुज़ूर अनवर ने वहां मौजूद सियासतदानों से फ़रमाया कि इस समय कुर्दिश लोगों को वास्तव में विश्व के समस्त भाइयों की तरफ़ से मदद की ज़रूरत है।

यह पूछने पर कि बांग्लादेश में जमाअत की क्या अवस्था है हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया बांग्लादेश की हुकूमत इन्साफ़ करने की कोशिश करती है लेकिन निचली सतह पर कई क्षेत्रों में लोकल हुक्काम की तरफ़ से मुल्ला के कारण से समस्याएं हैं। हुकूमत हमारे ख़िलाफ़ नहीं है लेकिन वहां का मुल्ला हमारे ख़िलाफ़ है। नैशनल स्तर पर तो लोग अक़्लमंद हैं, उन्हें पता है कि अगर उन्होंने अहमदियों के साथ वही सुलूक किया जो पाकिस्तान ने किया था तो फिर वह भी पाकिस्तान की तरह मुश्किलों का सामना करेंगे क्योंकि इस से उग्रवादी गिरोहों को और अधिक तरक़्क़ी करने का अवसर मिलता है।

यह मीटिंग 7 बजे तक जारी रही। इसके बाद इन तीनों मैंबरों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर खिंचवाने का सौभाग्य पाया।

(शेष................)

☆ ☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad